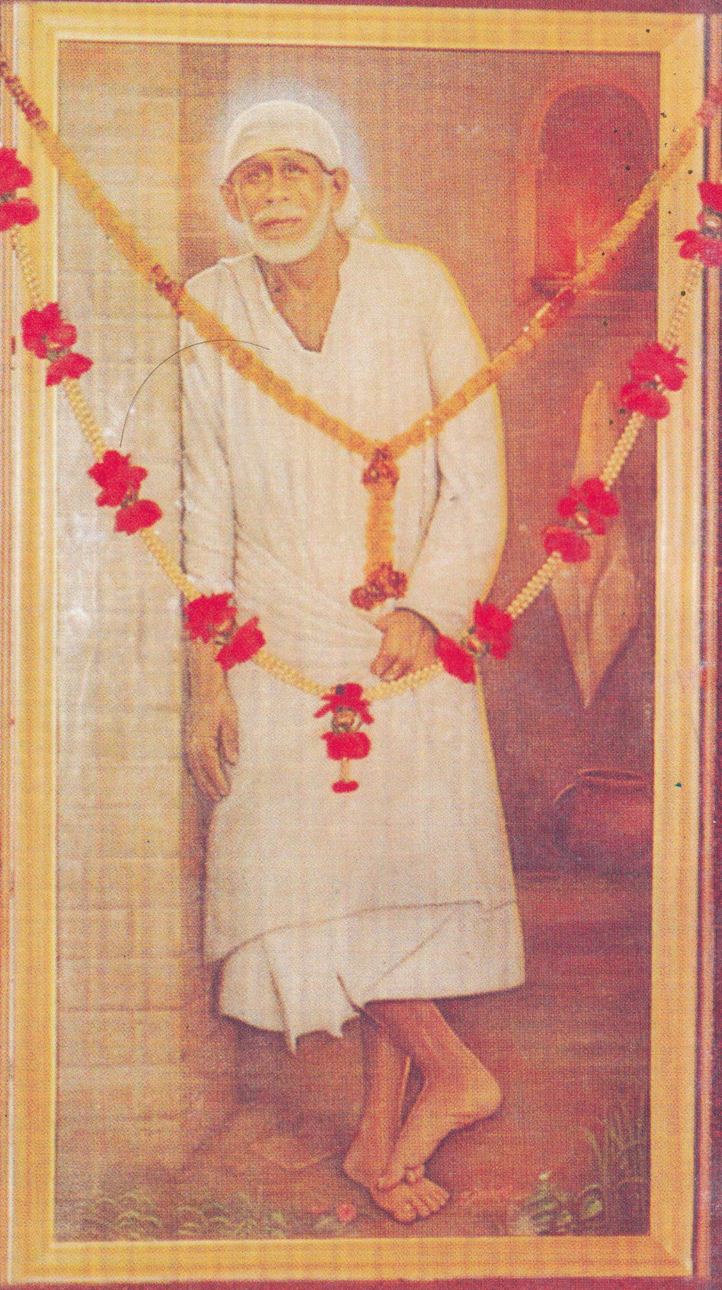

श्री साईबाबा जन्मस्थान मंदिर, पाथरी मार्गदर्शिका

संकलन व संपादन

वि. बा. खेर

हिंदी अनुवाद

गिरीश जोशी

श्री साईबाबा जन्मस्थान मंदिर, पाथरी मार्गदर्शिका

: संकलन व संपादन :
वि. बा. खेर

: हिंदी अनुवाद :
गिरीश जोशी

श्री साईबाबा जन्मस्थान मंदिर, पाथरी - मार्गदर्शिका

प्रकाशक :
अ. दि. चौधरी
व्यवस्थापकीय विश्वस्त,
श्री साई स्मारक समिति, पाथरी
पाथरी - ४३१५०६,
जिला-परभनी, महाराष्ट्र

मुद्रक :
ओम आर्ट प्रिन्टस्
हिरा कम्पाउड, चेंबूर कॉलनी,
मुम्बई - ४०० ०७४.

प्रथम संस्करण : मार्च, २००९

: रू. २०/-

अंतरंग

प्रस्तावना

श्री सांईबाबा के जन्मस्थान की खोज १

पाथरी सांई जन्मस्थान मंदिर स्थापना २०
प्रमुख टिप्पणी-

स्वामी सांई शरणानंद - अल्प परिचय २३

श्री बल्बबाबा - अल्प परिचय ३४

पाथरी सांई जन्मस्थान मंदिर में
मनाए जानेवाले वार्षिक समारोह ३७

श्री सांईबाबा अष्टोत्तरशतनामावलि : ३८

नामस्मरण का महत्त्व ४७

प्रस्तावना

समर्थ रामदास स्वामीजीने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जहाँ मन और तन की शांति महसूस होती है वहाँ जाने के लिए पुण्य की आवश्यकता होती है और इस प्रकार का अनुभव जीवन में श्रध्दालु और विवेकी प्रवृत्तियों के लोगों को ही आता है। इन्सान में सिर्फ उस प्रकार की प्रवृत्ति का होना अत्यंत जरुरी है। दत्तकृपासे इसी प्रकार का एक अनोखा अनुभव महसूस हुआ। यह जानकारी अभयासक, संशोधक श्रध्दालु और जिज्ञासु लोगों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाएगी।

"साईबाबा एक श्रेष्ठ अवतारी पुरुष थे। उन पर कई भक्तोंने विपुल साहित्य लिखा है। परंतु साईबाबा का खानदान, उनका गोत्र, मूल स्थान और जन्मभूमि के बारे में आजतक किसी भी प्रकार की ठोस सूचना प्राप्त नहीं होती थी। उपरोक्त विषय पर कई कथाएँ प्रचलित थी। श्री विश्वासराव खेर गत २५ सालों से इस विषय पर अथकतासे संशोधन करते थे। इस कार्य में उन्हें बहुत परिश्रम करने पड़े। कई जगहों की यात्रा करनी पडी। कई लोगों से मुलाकात और उपलब्ध सबूतों की जाँच करते समय उन्होंने ऊब महसूस नहीं की"।

भूतपूर्व हैद्राबाद निजाम राज्य का मराठवाडा यह प्रदेश आज महाराष्ट्र में है। यह इतिहास उस प्रदेश की परंपरा को चार चाँद लगानेवाला है। गोदावरी नदी के पवित्र तीरों पर बसी हुई यह पुण्यभूमि है। वासुदेवानंद सरस्वती के शिष्य योगानंद सरस्वती (उर्फ गांडा महाराज) का गुंज नामक क्षेत्र दत्तकृपा का एक अंश है। परभनी जिले में पाथरी नामक एक तालुका गाँव है। प्राचीन काल में पाथरी गाँव पार्थपूर अथवा प्रार्थ ग्राम से मशहूर था। इसी पाथरी गाँव के भुसारी परिवार के एक ब्राह्मण कुल में साईबाबा ने जन्म लिया। उनका नाम हरि था। भुसारी परिवार का पाथरी का घर उजड गया था। उस घर के सिर्फ कुछ अवशेष बाकी थे।[1]

जून १९७८ में यह जगह विश्वास खेर और दिनकर चौधरीजी ने प्रोफेसर भुसारी से "श्री साई स्मारक समिति, पाथरी" स्थापित करके इस संस्था के नाम से खरीद ली। १/६/१९७८ को इस खरेदी खत का पंजीकरण सेलू के सबरजिस्ट्रार की कचहरी में किया गया।

सुभाष दली नामक बंबई के एक जानेमाने आर्किटेक्ट है। उनके द्वारा अत्यंत कलात्मक ढंग से बनाए गए नक्शे बरहुकूम जन्मस्थान के प्राचीन वास्तु की जगह पर मंदिर के नए संगमरमर भवन का निर्माण किया गया।[२] मंदिर का गर्भगृह पुराने जमाने के घर के प्रसव कक्ष पर है। गर्भगृह में साईबाबा की पंचधातु की साढ़े पाँच फुट ऊँची मूर्ति है। मूर्ति अप्रतिम है।

नए वास्तु का नक्शा एक अभिनव योजना से बनवाया गया है। भुसारी परिवार के पुरातन घर का कुछ शेष बाकी था। उस शेष भाग को मंदिर के तहखानें मे सुरक्षित रखा गया है। उस पुराने घर का मिट्टी और पत्थर से बना हुआ कुछ हिस्सा और प्रसूति कक्ष है। खुदाई करते समय मिले हुए कुछ पूजा उपकरण, एक हनुमानजी की मूर्ति और एक मिट्टी का घडा आदि चीजें वहाँ सुरक्षित रखी गई है। प्राचीन वास्तु के साथ साथ इन सारी चीजों का दर्शन श्रध्दालु सहजता से पा सकते है।[२]

तहखाने में एक ध्यान मंदिर है। वहाँ साईबाबा का एक भव्य तैलचित्र रखा गया है। इस चित्र के दाएँ और बाएँ स्वामी साँई शरणानंद और बल्बबाबा की तस्वीरे हैं। संगमरमर का अत्यंत कल्पनात्मक ढंग से इस्तेमाल किया गया है। मंदिर का निर्माण, विद्युत व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था, रंगयोजना सुनियोजित रुप से की गई है।[३]

भुसारी खानदान के बारे में उपलब्ध हुई जानकारी वि. बा. खेरजी के "श्री साईबाबा के जन्मस्थान की खोज" इस लेख में विस्तृत रुप में दी गई है। पाथरी के साई मंदिर के निर्माण की महत्वपूर्ण बातें इस मार्गदर्शिका के दूसरे लेख में संचित की गई हैं। तदुपरान्त श्री साई

शरणानंद स्वामी और बल्बबाबा की आशिर्वचनों से पाथरी का साईमंदिर साकार हुआ। इन दोनों महान विभूतियों का अल्पपरिचय करा देने वाले लेख इस पुस्तिका में अंतर्भूत किए गए है।

आज पाथरी गाँव को जाने के लिए सरकार की बस सेवा भारी मात्रा में उपलब्ध है। पाथरी जाने के लिए मुंबई, पुणे, सोलापुर, अक्कलकोट, औरंगाबाद, नांदेड, अकोला, परभनी, उस्मानाबाद, लातूर आदि बडे शहरों सें बस सुविधा है। मनमाड, औरंगाबाद, जालना, परभनी, नांदेड रेल्वे मार्ग पर सेलू और मानवत रोड स्टेशनों से यह भाग जुड़ा हुआ है। सेलू स्टेशन से पाथरी जाने के लिए हर आधे घंटे के बाद एस.टी. है। ऑटो की भी सुविधा है। पाथरी एस.टी. बस स्थानक से मंदिर १ कि.मी. की दूरी पर है। इस बस स्थानक के पीछे संत साईबाबा मार्ग पर सांईलॉज है।

---

१) डा. भीमाशंकर देशपांडे, "श्री. साई जन्मभूमि, पार्थपूर." भक्तीसंगम-मार्च २०००

२) तत्रैव

३) तत्रैव

आभार

प्रस्तुत मराठी किताब का अनुवाद करने की अनुमति व्यवस्थापकीय विश्वस्त, श्री सांई स्मारक समिति, पाथरी और लेखक वि. बा. खेरजी ने मुझे दी इसीकारण मैं उनका ऋणी हूँ।

सौ. कुमकुम कन्सलजीने व्याकरण शुध्दीकरण और पुस्तक का हिंदी अनुवाद करने में जो अनमोल सहयोग दिया इसीलिए मैं उनका भी ऋणी हूँ।

****

श्री साईबाबा के जन्मस्थान की खोज

साईबाबा का जन्म, जन्मस्थान और उनकी परिवारिक पूर्व पीढी का रहस्य भेदन करने के लिए लेखक श्री खेरजीने सपत्नीक जून १९७५ में पाथरी गाँव प्रस्थान किया। उन्होंने वहां के गाँव वालों से की हुई बातों बातों में मिले हुए संदर्भो का विश्लेषण करके बडे परिश्रम और संयततासे कई सबूत इकठ्ठा किए। बाद में उन्होंने बडी सावधानी और कुशलता से सारे सबूतों का गठन किया। उन सबूतों के आधार पर हम अंदाजा कर सकते हैं कि पाथरी गाँव ही साईबाबा की जन्मभूमि है और वहीं के देशस्थ ब्राह्मण भुसारी परिवार में साईबाबा का जन्म हुआ था।

धुमालजीने, जो स्वयं साईबाबा के परमभक्त और नासिक के प्रख्यात वकील थे, डिस्टिक्ट्र मॅजिस्ट्रेट के सवालों का जबाब देते समय कहा था कि साईबाबा न हिंदु हैं न मुसलमान परंतु वे इन दोनों धर्मोसे श्रेष्ठतम थे।[१] धुमालजी का यह जबाब निश्चित रुपसे यथार्थ और अर्थपूर्ण हैं क्यो कि अवतारी पुरुषों की जातिपाँति पर ध्यान न देते हुए उनके साथ सदैव आदर सम्मान की भावना से ही व्यवहार करना आवश्यक और उचित होता है। मराठी भाषा की एक कहावत के अनुसार नदी का उद्गम और ऋुषि के कुल को ज्यादा महत्व नहीं देना चाहिए क्यों कि इन दोनों का प्रारंभ देखते हुए कई बार जिज्ञासु लोगों को निराशा हो सकती है। यह कहावत जिस हेतु से निर्माण हुई थी वह भूमिका वर्तमानकाल में मान्य नहीं है। आजकल के विज्ञान प्रधान बुद्धिजीवी युग में सारे तत्वों को परखने हेतु उनकी जड़ खोजने का प्रयास करना अनुचित नहीं है। किसी भी धर्म के सूत्र को यदि व्यापक स्तर पर मान्यता हासिल करनी हो तो उसे बुध्दि, विवेक और व्यापक स्तर के तत्वों की न्याय कसौटी पार करना अत्यावश्यक है।[२] इसी दृष्टि से काल की रेत पर जिनके पदचिन्ह होते हैं उन साधुजनों के सिध्दान्तों की भूमिका खोजना उचित माना जाता हैं। प्रा. एरिक एच्. एरिकसन के, "गांधीजीका सत्य" (Gandhi's Truth) नामक ग्रंथ में एक पाश्चात्य मानसशास्त्रज्ञ की महात्मा गांधी के ऐतिहासिक वास्तव

और उनकी दृष्टि से जो सत्य है उसी की खोज का वर्णन है।[३] जिन्होने इस ग्रंथ को पढ़ा है उन्हीं को उपरोक्त विधान का गार्भितार्थ ज्ञात होगा।

साईबाबा का जन्मस्थान उनका खानदान आदि की जानकारी के विश्लेषण से उनके जीवनानुषांगिक घटनाओं की संगति लगेगी इसी श्रध्दा से जून १९७५ में मैने सपत्नीक मराठवाडा की यात्रा की थी। उस समय जो जानकारी मुझे प्राप्त हुई उसीकी प्रस्तुति मैंने इस लेख में की हैं। प्रथमतः साईबाबा का स्वरुप, उनकी पोशाक और खानपान की आदतें, उस समय के शिरडी गाँव के हालात, साईबाबा का जन्मस्थान और उनके परिवार संबंधी अलग अलग विचार मैं संक्षेप में व्यक्त करता हूँ।

साईबाबा का देहरुप हष्टपुष्ट था। वे आजानुबाहु थे। वे मध्यम कदके थे। उनका वर्ण केतकी सफेद था। उनकी आँखे चमकीली और तेजस्वी होने के कारण उनकी आँखो द्वारा ही प्रथमदर्शन में उनकी छाप पडती थी। बाबा की आँखो में इतना तेज और तीक्ष्णता थी कि उनकी आँखो की तरफ देखने वाले को महसूस होता था कि उनका अंतःकरण उनके सामने संपूर्णतः प्रकट हो रहा है।[४] उनके कान छेदे हुए थे[५] और उनकी सुंता नहीं हुई थी।[६] इसी कारणवश वे हिंदू होंगे यह अनुमान होता था। परंतु उनकी पोशाक फकीरों के समान थी और वे एक खंडहर स्वरुप मस्जिद में रहते थे। उसे वे द्वारकामाई कहते थे। मस्जिद में सदैव धूनी प्रज्वलित रहती थी। भक्तों को शंख बजाकर और घंटानाद करके बडे ही ठाट से पूजा करने की अनुमति थी।

मस्जिद के बाहरी आँगन में तुलसी वृंदावन था। बाबा के हिंदु भक्त उसी आँगन में रामनवमी का त्यौहार बडे धूम धामसे मनाते थे। बाबा भी उस त्यौहार में बडी खुशी से शामिल होते थे। उसी दिन स्थानीय मुसलमान लोग संदल जुलूस निकालते थे। बाबा उसे भी मना नहीं करते थे। खाने के बारे में बाबा उदार मतवादी थे। दूसरे

फकीरों के साथ साथ उन्होंने मांस ओर मछली का भी सेवन किया था ऐसा लोग कहते हैं। “अल्ला मालिक” यह लफ्ज़ वे सदैव दोहराते थे। परंतु राम, कृष्ण, गणेश, शिव, हनुमान, दत्तात्रेय अथवा भक्तों के गुरु स्वरुप में वे दर्शन देते थे। नानासाहब चांदोरकर के साथ बाबाने जो गीता भाष्य किया था उससे उन्हें भगवद्‌गीता का भी सूक्ष्म और यथार्थ ज्ञान था यह साफ जाहिर होता था। कई बार बाबा मुसलमान लोगों के साथ साथ कुराण के पहले सुरा का भी पठन करते थे। उन्हें कई भाषाएँ ज्ञात थी परंतु यह भाषाप्रभुत्व उन्होंने कब और कैसे प्राप्त किया था इसकी जानकारी किसी को भी नहीं थी।

प्रायः बाबा एक लोकोत्तर व्यक्ति थे। उनकी प्राचीन विख्यात संतों और योगीजनों के समान मनोभूमिका थी। उन पर सूफी पंथ का गहरा प्रभाव था। परंतु इसके साथ साथ हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि एक बार कोर्ट नियुक्त एक पूछताछ अधिकारी के सामने गवाही के समय उन्होंने कहा था कि उनका धर्मतत्व अथवा विचारप्रणाली “कबीर” है।[८]

सॉलिसिटर हरी सीताराम दीक्षित, मुंबई विधान परिषद के माजी सदस्य साईबाबा के अत्यंत निःस्वार्थ भक्त थे। श्री साईसच्चरित् को लिखे हुए उपोद्‌घात में वे लिखते हैं कि महाराज मूलतः कहाँ के रहनेवाले थे और उनके मातापिता कौन थे इस बारे में ठोस जानकारी प्राप्त नहीं होती हैं परंतु इतना तो हम मान सकते है कि मोंगलाई प्रांत से महाराज का करीबी का रिश्ता था। महाराज के वक्तव्य में शेलू, जालना, माणवद (मानवत), पाथरी, परभनी, नौरंगाबाद (औरंगाबाद) बीड, बेदर ऐसे मोंगलाई प्रांत के गाँवों का नाम अक्सर आता था। एक बार पाथरी गाँव का एक गृहस्थ बाबा के दर्शनार्थ आया था। बाबा ने उससें पाथरी के बारे में काफी बातचीत की थी। उन्होने उस समय गाँव के प्रमुख व्यक्तियों के बारे में जिस तरह से बात की थी उससे उन्हें पाथरी गाँव की

विशेष जानकारी थी यह निश्चित रुप से हम मान सकते हैं परंतु उनका जन्म पाथरी गाँव का ही था इस प्रकार का सुनिश्चित अनुमान हम नहीं कर सकते हैं । इसी प्रकार बाबा ब्राह्मण थे कि मुसलमान इसका भी अंदाजा दृढतापूर्वक हम लगा नहीं सकते।[९]

म्हालसापति, साईबाबा के एक सबसे पुराने और प्रिय भक्त थें। स्वयं बाबा नें उन्हें एक समय कहा था कि उनका (साईबाबा) जन्म पाथरी गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके मातापिता नें उन्हें एक फकीर के हाथों सुपुर्द किया था। साईबाबा ने यह बात कहने के बाद कुछ ही दिनों में पाथरी गाँव के एक गृहस्थ कुछ कार्य से शिरडी के नजदीक कोन्हाला नामक गाँव में आये थे। जब वह सज्जन शिरडी में आये थे तब उस समय पाथरी के कई सारे लोंगो के नाम लेकर उनके बारें में बाबाने पूछताछ की थी।[१०] भगत म्हालसापति अत्यंत सरल स्वभाव के और सत्यवक्ता थे। उनके वैराग्य के कारण साईबाबा भी उन्हें बहुत प्रतिष्ठा देते थे। इसी कारण उन्ही का उपरोक्त निवदेन बहुतही महत्वपूर्ण और विश्वसनीय है ऐसा हम मान सकते है।[११]

अपने मातापिता से संबंधी जुडे हुए किसी भी तर्क को साईबाबा पुष्टि नहीं देते थे। उनका कहना था कि “पुरुष” उनका पिता और “माया” उनकी माता हैं। अपनी सारी जिंदगी अनुसन्धान में व्यतीत करनेवाले एक चरित्र लेखकने लिखा है कि बाबा का जन्म एक रहस्य है, और उसी के बारे में ठोस ज्ञानी किसी एक भी इन्सान से उनकी मुलाकात नहीं हुई है।[१२]

वामन प्राणगोविंद पटेल पेशे से सॉलिसिटर थे। यह एक ऐसी हस्ती है, जिनकी राय भी बाबा के जन्मरहस्य की जानकारी में महत्वपूर्ण मानना अत्यावश्यक है। इ. स. १९५३ में उन्होंने संन्यास धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। तदुपरान्त वे स्वामी साईशरणानंद इस नाम से

जाने जाते हैं। उनका धारण किया हुआ यह नाम ही साईबाबा के प्रति उनके मन का आदर और भक्ति का निर्देशक है। प्रस्तुत विषय पर यदि उनका मत प्रमाण मानना हो तो उनके स्वयं के गुजराती भाषा में लिखे हुए साईबाबा के चरित्र से उनका उपरोक्त विषय पर जो अधिकार है उसे समझना चाहिए।

वामन गोविंद पटेल का जन्म ५ अप्रैल १८८९ में हुआ था और वे अभी भी जीवित है।[१३] इ. स. १९१० में वे बम्बई के एलफिन्स्टन् महाविद्यालय से तत्वज्ञान विषय में उत्तीर्ण हुए। उन्होंने १९१२ में एल्. एल्. बी. की पदवी हासिल की थी। स्वामी विवेकानंद की तरह उन्हें भी प्रत्यक्ष ईश्वरीय दर्शन की अभिलाषा थी। वे इसी कारण सदैव साधु सज्जनों को मिलते थे। परंतु उनकी वह तमन्ना कोई भी पूरी नहीं कर सका था। इसी कारण उनके पिताजी ने उन्हें साईबाबा से मिलने को कहा। १० दिसम्बर १९११ को वामनभाई बम्बई से निकलकर दूसरे दिन कोपरगाँव पहुँच कर और वहाँ से तांगा करके शिरडी जाने लगे। ताँगाजब लेंडी पहुँचा तभी तांगेवालेने ताँगा रोकते हुए कहा कि वह देखिए सामने से साईबाबा जा रहे हैं। वामनभाई तत्काल ताँगे से कूद पडे। उन्होंने साईबाबा को प्रणाम किया और अहो आश्चर्यम् साईबाबा नें उन्हें कहा कि परमेश्वर है, ईश्वर नहीं है ऐसा क्यों कहते हो ? साईबाबा के साथ हुए इस प्रथम मुलाकात का समग्र वृत्तान्त स्वामी शरणांनदने प्रस्तुत लेखक को सविस्तरता पूर्वक निवेदन किया था। उस मुलाकात से वामनभाई के जीवन में आमूलचूर परिवर्तन होनेवाला था। उनके मन के सारे संदेह पूर्ण रुपसें शांत हुए और उन्हें महसूस हुआ कि सद्‌गुरु रुप में स्वीकार करने लायक गुरु उन्हें प्राप्त हुआ है। उसके बाद १९१३ की गर्मियों की छुट्टियों में वामनभाई वापस शिरडी गए थे। उस समय साईबाबाने उन्हें ग्यारह महीनों तक शिरडी में ठहरा लिया और एक दिन अचानक बाबाने बिना कुछ कहे

वामनभाई को शिरडी छोडने को कहा। शिरडी के इस दीर्घ आवास में बाबा उन्हें भिक्षा भी माँगने भेजते थे। वामनभाई इस कालखण्ड में साईबाबा के निकट सान्निध्य में आये थे। बाबा बडे प्यारसे उन्हें "बाबू" करके पुकारते थे।[१४] वामनभाई यथावकाश सॉलिसिटर की परिक्षा उत्तीर्ण हुए और उन्होंने सॉलिसिटरी व्यवसाय शुरु किया। परंतु उन्हें नैतिक और आध्यात्मिक तत्वों में ज्यादा रुचि थी। इसी कारण उन्होंने अहमदाबाद के 'सस्तु साहित्य वर्धक' कार्यालय के लिए विपुल लेखन किया। उन्होंने मराठी भाषा में लिखित श्री साई सच्चरित् का गुजराती भाषा में सरल अनुवाद किया है। यदि किसी भी व्यक्ति को साईबाबा की जीवनी और तत्वज्ञान का आस्थापूर्वक अध्ययन करना हो तो उसे वामनभाई ने गुजराती भाषा में लिखे हुए साईबाबा के चरित्र का अवलोकन अवश्यमेव करना जरुरी है।[१५]

साँई स्वामी शरणानंद के प्रति इतनी जानकारी प्राप्त होने के बाद उन्होंने साईबाबा के प्रति कौन से विचार व्यक्त किये हैं उसी की जानकारी अब हम प्राप्त कर लेते हैं। स्वामी साँई शरणानंद अनुमोदित करते हैं कि बाबा स्वयं को ब्राह्मण मानते थे यह बात सर्वसामान्य हैं। कोई भी व्यक्ति उनके ब्राह्मणत्व पर शंका करता था तब वे नाराज होते थे। इ. स. १९१२ में वामनभाई के पिता जलोदर व्याधि से त्रस्त थे। उनका स्वस्थ होना असंभव था उसी वर्ष के दिसंबर महीने में वामनभाई शिरडी गये थे। वामनभाई के विचार जानते हुए तत्काल साईबाबा ने उन्हें अपने पिता को शिरडी लाने के लिए कह दिया। बाबा की यह बात सुनकर साई शरणानंद के मन में विचार आया कि क्या अपने सनातन वृत्ति के पिता इस मुसलमान फकीर के पास आएँगे ?। इस समय बाबा तत्काल बोल उठे थे कि क्या मैं ब्राह्मण नहीं हूँ ? स्वामीजी ने ऐसा भी लिखा है कि म्हालसापती जो बाबा के सबसे करीबी भक्त थे उन्ही को बाबाने स्वयं कहा था कि उनका जन्म एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्हें बचपन में एक फकीर के हाथों सुपुर्द किया गया था।[१६]

स्वामी शरणानंद आगे और भी लिखते हैं कि एक बार बातों बातों में बाबाने स्वयं उन्हें कहा था कि अपनी आठ साल की उम्र में वे अपना घर, अपने मातापिता का त्याग करके गंगा किनारे (बाबा गोदावरी नदी को गंगा कहते थे) आए थे।[७]

सुमन सुंदरजीने भी साईबाबा की जन्मकथा के बारें में एक लेख लिखा हैं।[८] सुमनजी को यह जानकारी माधवनाथ नामक साधुपुरुष से अवगत हुई थी ऐसा उनका कहना हैं। उसी लेख का सारांश स्वामी साई शरणानंद के गुजराती में लिखे हुए साईबाबा चरित्र के सौलहवें पृष्ठपर हैं। पाथरी गाँव के एक यजुर्वेदी ब्राह्मण थे। उन्हें तीन पुत्र थे। उन तीनों में सबसे अग्रज थे साईबाबा। जब साईबाबा पाँच साल की उम्र के थे तब उस ब्राह्मण के घर एक फकीर आया था और कहने लगा था कि उसका उसे लौटा दो। "मेरे पास जो भी कुछ है वह सब आपकाही तो है"। ऐसा जवाब उस ब्राह्मण ने दिया था। तब फकीर ने ब्राह्मण से उसके बडे लडके की माँग की और उसे अपने साथ लेकर वह चल पडा। चार साल के बाद वह फकीर वापस लौट आया और ब्राह्मण की सहमति से उस लडके को और तीन साल के लिए अपने साथ ले गया। इसी कारण बारह से अठारह साल की उम्र तक साईबाबा अज्ञातवास में थे। उन्नतीस साल की आयु में वे शिरडी गाँव के नीम के पेड तले प्रगट हुए थे।

सत्य साईबाबा स्वयं को शिरडी के साईबाबा का अवतार मानते हैं उनके चरित्र में साईबाबा के बारें में थोडी निराली कथा लिखी गई है। स्वामी साई शरणानंद साईबाबा के गुजराती भाषा के चरित्र में पृष्ठ १३ और २७-२८ पर उस कथा का उल्लेख करतें हैं। उस कथा के अनुसार साईबाबा के मातापिता पाथरी गाँव के रहिवासी थे। उनके पिता का नाम गंगाभाव और माता का नाम था देवगिरीअम्मा। वे दम्पति बडे ही

धर्मशील थे। वे दोनों भगवान शंकर के भक्त थे। संतान न होने के कारण वे बडे दुखी थे। परंतु वे दोनो भगवान शंकर की आराधना करते थे। इसी कारण संतुष्ट होकर भगवान शंकर और जगन्माता पार्वती से उन्हें वरदान प्राप्त हुआ था। इस वरदान के रुप में स्वयं भगवान शंकर ने उनके कुल में साईबाबा के रुप में जन्म लिया। दिनों दिन गंगाभाव तपश्चर्या में अधिकाधिक निमग्न होनें लगे और उन्होंने संसार त्यागने का निश्चय किया।

देवगिरीअम्मा नें भी उनके साथ जाने का प्रण किया। और साईबाबा को एक पेड के नीचे छोडकर वे दोनों जंगल में चले गए। उसी रास्ते से जानेवाले एक फकीर दम्पति की नजर उस बालक पर गई और उन्होंने अल्ला की देन समझकर उस बच्चे को उठा लिया। उन्होंने उस बच्चे को बारह साल तक पालपोसकर बडा किया। एक दिन उस गाँव के जमीनदार के बेटे के साथ खेलखेल में साईबाबा ने एक शिवलिंग जीत लिया। उस समय से बाबा सिर्फ उस शिवलिंग के साथ खेलने में मशगूल हो गए। इसीकारण स्थानीय मुसलमानों ने उस फकीर को, बाबा को अपने घर से निकाल देने पर मजबूर किया। तत्पश्चात साईबाबा गोदावरी के तीर पर भटकने लगे। इसी भटकन में बाबा औरंगाबाद पहुँचे। वहीं पे धूपखेडे गाँव के चांदपाटील से उनकी मुलाकात हुई। साईबाबा की कृपा से पाटील को उसकी खोयी हुई घोडी मिल गयी। उसके बाद का साईबाबा का चरित्र तो सभी को ज्ञात है।

इसी कारण साईबाबा पाथरी गाँव से निश्चित् रुप से जुडे होंगे यह सोचते हुए हमने पाथरी जाने का निश्चय किया। उस समय हमें पाथरी गाँव के बारे में बहुत ही कम जानकारी थी। आगे जो पाथरी गाँव का इतिहास वर्णन किया है वह दक्षिण के मध्ययुगीन इतिहास के एक तज्ञ के साथ की हुई चर्चा और कई संदर्भ ग्रंथो पर आधारित है।

मध्ययुगीन काल में पाथरी गाँव पार्थपुर नाम से प्रख्यात था। यह नाम पार्थ अथवा अर्जुन नामक वीर पांडव के कारण निर्धारित किया था। यह गाँव देवगिरी (दौलताबाद) की आग्नेय दिशा में करीबन १६० कि. मी. और विदर्भ (मंगला) व गोदावरी संगम के नैऋत्य दिशा से करीबन पाँच कि. मी. दूर बसा है। उस समय यह भूभाग विदर्भ राज्य का एक हिस्सा था। उसपर देवगिरी के यादव राजाओं की सत्ता थी। उस समय पाथरी गणितशास्त्र के विद्यापीठ के नाते प्रख्यात था।[१९]

यादव राज्य का एक हिस्सा होने के कारण पाथरी का इतिहास देवगिरी अथवा दौलताबाद के इतिहास से जुडा हुआ है। बहामनी राज्य के काल में पाथरी गाँव के कुलकर्णी (वतनदारी पद का एक) परिवार की बडी कीर्ति थी। भैरो अथवा भैरव कुलकर्णी का तिम्मभट नामक लडका संभवतः मुसलमानों के धर्मच्छल से पीडित होने के कारण अपने यौवन काल में ही विजयनगर गया और वहाँ नौकरी करने लगा।[२०] इ. स. १४४० में विजयनगर के साथ हुए युध्द में सुलतान शहा बहामनी उसे गिरफ्तार करके बीदर लाया था। इ. स. १४३२ में बहामनी राज्य की राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानान्तरित की गयी थी।[२१] वहाँ पे तिम्मभट को मुस्लिम धर्म की दीक्षा दी गई और उसका नाम हसन रखा गया। वहाँ उसे राजा के गुलाम की हैसियत से पाला गया। सुलतान ने उसकी औकात को देखते हुए उसकी नियुक्ति ज्येष्ठ राजपुत्र महंमद का साथी करके की थी इसी कराण हसन की सारी तामील राजपुत्र महमंद के साथ हुई । उसने पर्शियन और अरबी भाषाओं पर प्रभुत्व संपादन किया। उसके पिता का नाम भैरो होने के कारण उसे लोग मल्लिक भैरो नाम से जानने लगे। परंतु शहाजादे को यह नाम उच्चारण के लिए कठिन लगने लगा इसी कारण राजपुत्र और सारे लोग उसे भैरी नाम से संबोधित करने लगे। शहजादा मुहम्मद ने स्वयं राजा बनने के बाद अपने दोस्त को एक हजार घोडों का मन्सबदार बनवा दिया।[२२]

अपने पैदाईशी गुणों के कारण थोडी ही कालवधि में मल्लिक हसन बीस हजार घुडसवारों का मन्सबदार बन गया। उसे मिर-ए-शिकार यह खिताब सारे मानचिन्हों के साथ दिया गया था। थोडे ही दिनों में कुशवेग पदपर उसकी नियुक्ति की गई। इ. स. १४७१ में उडीसा के राजा मंगलराम के विरोधी लडाई में मल्लिक हुसेन ने अपनी अतुलनीय और अद्वितीय वीरता से उसे पराजित किया। हमवीर को पुनश्च राज्यपद प्रदान किया। उसने राजभंडारी पर कब्जा करके कोंडुबिडु के कई दुर्ग भी जीत लिए थे।

उपरोक्त कार्य के लिए उसे 'अशरफ-ए-हुमायुन' 'निझाम-उल्-मुल्क' खिताब से गौरवान्वित किया गया और तेलंगण गाँव का सरलष्कर बना दिया गया उसने सम्पूर्ण तेलंगण जीत लिया और कर्नाटक पर भी हमला करने की तैयारी की। नवम्बर १४८० मैं उसने कोंडुबिडु पर अपना वर्चस्व प्रस्थापित किया। इसीकारण उसे 'मसनद-ए-अली' और 'उल्लघ-ए-आझम' खिताब प्रदान करके राजभंडारी का सूबेदार बना दिया गया था। तद्नंतर वह सुल्तान के साथ विजयनगर राज्य के खिलाफ हुई लडाई में शामिल हुआ और उसने कांची के किले पर फतह की। लडाई से वापसी में कोंडापल्ली ठहराव में उसने बहामनी राज्य के दिवान महमूद गवान की हत्या कर दी। महमुद गवान के मृत्युपश्चात् राज्य का संपूर्ण कारोबार मल्लिक हसन के हाथों आया। उसने कई सालों तक कारोबार सम्भाला। परंतु महमूद गवान की हत्या के कारण राज्य विभाजन को चालना मिल गई। उस अशांत वातावरण में सूबेदारों ने स्थानीय लोगों को खुश करके अपने अपने स्थान मजबूत किए। इसी कारण मल्लिक हसन के लिए सूबेदरों को काबू में रखना मुश्किल हो गया और अंत में उसी के एक आश्रित ने इ. स. १४८६ में उसका खून कर दिया।

इसी कारण मल्लिक हसन के बेटे अहमद को अपनी करतूत

स्वतंत्र राज्य निर्माण करने की प्रेरणा हुई और उसने खुले आम बगावत के शीघ्र ही पतन की और जानेवाली राज्यसत्ता को समाप्त करने का ाचय किया। जुन्नर पहुँचने के बाद उसने स्वयं के नाम की बाहरी ाम उल् मुल्क करके उद्घोषणा की और अपने पिता के शत्रुओं पर ला करके अहमदनगर के निजामशाही की स्थापना की।[२३]

इ. स. १५१८ में बुन्हाण निजामशहाने प्रथम ाड राज्य के अल्लाउद्दिन इमादसे पाथरी और नगर जिलों की माँग ारे जिलों के अदलबदल में की। इस आदान प्रदान का हेतु बताया गया थरी उसके पुश्तों का गाँव था और उसके कई रिश्तेदार वहाँ के ्वासी थे। परंतु अल्लाउद्दिन इमाद ने इस विनिमय को ठुकराया। इसी रण बुन्हान निजामशहाने उसके खिलाफ युध्द घोषित करके उसका ज्य खालसा किया।[२४] अंत मे दक्षिण स्थित मोगल बादशाह के सूबेदार जाम ने पाथरी सहित दौलताबाद पर अपना झंडा स्थापित कर दिया। ी समय से पाथरी परभनी जिले का एक तालुका स्थान है। इ. स. ५३ तक परभनी जिला विदर्भ अथवा वन्हाड प्रांत का एक हिस्सा था। ंतु निजामने वन्हाड प्रांत इ. स. १८५३ में एक तह के अनुसार ब्रिटिशों को पुर्द करने के बाद परभनी जिला विदर्भ से अलग करके पाथरी के साथ थ निजाम राज्य के मराठवाडा प्रांत में शामिल किया गया।

मनमाड सिकंदराबाद के रेलवे मार्ग पर बसे हुए मानवत ्वे स्टेशन से पाथरी १६ कि. मी. है। उसी रेलवे मार्ग पर के सेलू रेलवे ेशन से पाथरी २३ कि. मी. है। साईबाबा के बचपन के बारे में श्वसनीय जानकारी हेतु हमने १९९५ के गर्मियों में कुछ दिन वहाँ ठहरने ा निश्चय किया। पहले से निश्चित एक के बाद एक खून की वारदातों के ारण मानवत गाँव काफी प्रसिध्द हुआ था। जून १९७५ तक हमने पाथरी ; चौधरीजी से अच्छी तरह से संपर्क स्थापित किया था। हम उन्ही के यहाँ

ठहरे थे। दिनकर राव चौधरी पाथरी गाँव के सुप्रसिध्द चौधरी खानदान के वंशज है। उस खानदान का लम्बा इतिहास है। दिनकर राव चौधरी स्वयं एक आधुनिकतावादी किसान और वकील हैं। उन्होंने हमारा आतिथ्य अत्यंत आत्मीयता से और सुव्यवस्थित ढंग से किया और खोज कार्य में, मानो स्वयंकाही कार्य है इसी दृष्टि से उन्होंने हमारी सभी तरह सहायता भी की।

चौधरी खानदान की कई शाखाएँ पाथरी गाँव में है। उनमे से अधिकांश लोग अंदाजन १४ वी सदी में बाँधे हुए एक गढी में रहते हैं। हाल ही में दिनकरराव चौधरीजी ने उपरोक्त गढी के बाहर अपने नए घर का निर्माण किया हैं। अब वे वहीं पर रहते हैं।[२५] हमारे पाथरी आवास के दौरान में हम उन्हीं के साथ वहाँ पर ठहरे थे। दिनांक २१ जून की शाम को हम सारे बरामदे में गप्पे लगाते हुए बैठे थे। उसी समय बातों बातों में दिनकरराव ने कहा कि एक दिन उनके पिताजी-वासुदेवराजीने-जब भाऊ भुसारी उनके यहाँ भिक्षा माँगने आये थे तब अपनी अंगुली दिखाते हुए बताया था कि देखो साईबाबा के वंशजों की कितनी बुरी हालत हो गयी है।[२६] दूसरे दिन दिनकररावजी के कई मुवक्किलों के साथ बातों बातों में पता चला कि साईबाबा पाथरी गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। परंतु जब वे छोटे थे उसी समय एक अवलिया उन्हें लेकर गया था। और बाद में उनके बारे में कुछ पता नहीं चला था। उनकी बातों से हमें और एक कडी प्राप्त हुई। हमने तुरंत पाथरी गाँव के सारे ब्राह्मण परिवारों की सूची बनाने का कार्य शुरु कर दिया।

पाथरी गाँव के सारे ब्राह्मण परिवार देशस्थ शाखा के हैं। उनमें से कई ऋग्वेदी और कई यजुर्वेदी शाखा के हैं। उपरोक्त दोनो शाखाओं के अलावा देशस्थ ब्राह्मण शाखा के इतर शाखीय परिवार पाथरी गाँव में नहीं हैं। हमनें तुरंत हर ब्राह्मण परिवार के घर जाकर गुरुजनों से मिलकर उनके कुल कें बारे में जानकारी हासिल करने का कार्य शुरु

किया। तब हमें पता चला कि सिर्फ भुसारी परिवार का अपवाद छोडकर उन ब्राह्मण परिवारों के कुलदेवता ज्यादा तर माहूर गाँव की रेणुकादेवी और आंबेजोगाई गाँव की योगेश्वरी है। भुसारी परिवार माध्यंदिन शाखा के शुक्ल यजुर्वेदिय ब्राह्मण है और उनका गोत्र कौशिक है। उनका कुलदेवता पाथरी गाँव की सीमापर की कुम्हारबावडी अथवा पंचबावडी का हनुमान है। इस संगोष्ठी से हमारे विचारों को एक नई दिशा प्राप्त हुई। श्रीराम और हनुमानजी के प्रति साईबाबा के मन में जो आदरसम्मान और भक्ति थी उसे याद करते हमें महसूस हुआ कि हमारा अनुसंधान सफल होगा। हम तत्काल वैष्णव गली में गए और भुसारी परिवार के टूटे हुए घर के अवशेषों का (घर क्रमांक ४-४३८-६१) अत्यंत श्रध्दा और आदरसहित दर्शन किया। वहाँ से हम कुम्हारबावडी के हनुमाजी के दर्शन हेतु गए। पाथरी गाँव की सीमापर लेंडी नामक नदिका हैं। इस नाम से शिरडी के लेंडी बाग की याद आयी। इन दोनों के बीच का सम्बन्ध स्पष्ट है। मराठवाडा की आम प्रचलित मराठी बोली और साईबाबा की मराठी बोली भाषा में बहुतही समानता है। मराठवाडा के सारे सामाजिक स्तरों की बोली एकसमान ही है।

पाथरी गाँव की जनसंख्या अंदाजन दस हजार है। परंतु आज भी पाथरी गाँव कई शतकों पुराने अपनें उसी पिछडें रुप में हैं। आजादी के बाद भी गाँव को प्रगति का स्पर्श बहुतही अल्पमात्रा में हुआ है ऐसा महसूस होता है।[२७] थोडे ही सालों पहले गाँव में बिजली योजना कार्यान्वित हुई है और एस.टी. बस की सुविधा से पाथरी अन्य गाँवो से जुडा दिया गया है। परंतु अन्यथा वर्तमान में वहाँ का जनजीवन पुरातन काल की तरह मंद ओर सुस्त है। बाबा जिस काल में पैदा हुए उसी में मेरा मन रत हुआ था। बाबा की जन्मतिथि और वर्ष के बारे में निश्चित रुप से किसी को भी पता नहीं है। बाबा प्रथमतः कब शिरडी आए इस बातपर भी

मतभेद हैं। श्री साई सच्चरित के आधार से इ. स. १८५४ में शिरडी में प्रथमतः बाबा का आगमन हुआ। बाद में वे गुप्त हुए और दुबारा १८५८ में प्रगट हुए। परंतु बी. व्ही. नरसिंह स्वामी के मतानुसार बाबा शिरडी में १८७२ में आए थे।[२८] एम. व्ही. प्रधान भी उसी से सहमत हैं।[२९] १५ अक्तूबर १९१८ में बाबा नें महासमाधि ली इस बात पर सभी का एक मत है। बाबाके जो छायाचित्र हैं उनसे हम सिर्फ बाबा की उम्र का अंदाजा कर सकते हैं।

पाथरी गाँव के भुसारी परिवार में साईबाबा पैदा हुए इस बात को क्या हम दृढतासे मान सकते हैं। पाथरी गाँव के एक प्रसिध्द व्यक्ति ने इस के बारे में अपने बेटे को जो कुछ क़हा उसके अलावा उपरोक्त सिध्दान्त की पुष्टि के लिए दूसरे कुछ सबूतों की उपलब्धि है क्या ? यह अनुमान साबित करने के लिए अधिक प्रमाण हासिल करने के कार्य में मै जुटा रहा। हमने साईबाबा के जिस घर का पता लगाया था उस मकान के मालिक प्रोफेसर रघुनाथ महारुद्र भुसारी से मैने पत्रद्वारा संपर्क स्थापित किया। उस समय भुसारीजी ओस्मानिया विश्वविघालय में मराठी भाषा के प्राध्यापक थे। वे संस्कृत भी सिखाते थे। वे सरकारी महाविघालय के प्राचार्य भी थे। वे इ. स. १९५९ में निवृत होकर हैद्राबाद में स्थायी रुप से रहे। उनका जन्म पाथरी में हुआ था। उन्होंने वहीं से प्राथमिक शिक्षा हासिल की थी। आठ साल की उम्र में ही उनके पिता की मृत्यु हुई थी। बारह साल की उम्र में पाथरी छोडकर वे शिक्षा हेतु परभनी गाँव चले गये थे। मॅट्रिक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए हैदराबाद गए। उन्होंने विश्वविघालय में तीसरे क्रमांक से बी. ए. की परिक्षा उत्तीर्ण की थी। इसीकारण उन्हें कलकत्ता विश्वविघालय की ओर से एम. ए. की पढाई करने हेतू छात्रवृत्ति मिली थी। १९२६ में संस्कृत और पुराणवस्तु संशोधन विषयों में उन्होंने एम. ए. पदवी हासिल की थी। उन्होंने डा. देवदत्त रामकृष्ण भंडारकर के पास भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति का

अभ्यास किया था। तत्पश्चात वे नागपुर विश्वविद्यालय से मराठी भाषा में एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे।

प्रो. भुसारी ने कहा था कि कोनेरदादा उनके खानदान के पहले ज्ञात व्यक्ति है। बाद में दो पीढ़ियों तक कुछ भी जानकारी उपलब्ध नहीं है। परंतु उसके बाद तीन पीढियों तक का जो वंशवृक्ष है वह इस प्रकार है।

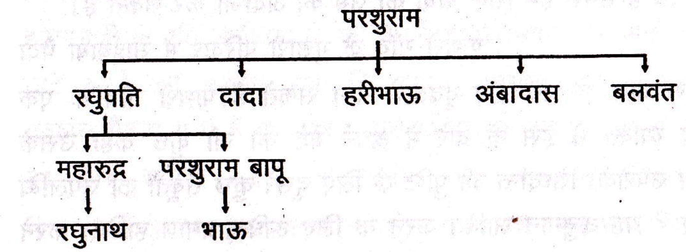

प्रो. भुसारी की दादीने बचपन में उन्हें कहा था कि अंबादास और बलवंत अपना भाग्य आजमाने हेतू पाथरी गाँव छोडकर गए थे और हरीभाऊने ईश्वर की खोज करने हेतू गृहत्याग किया होगा। बाद में उनके पीढी से परशुराम बापू नें भी मंजार्थ स्थान में संन्यास ग्रहण किया था। बीड जिले में गोदावरी और सिंधुफेणा नदियों के संगम पर मंजार्थ स्थान है। परशुराम बापु का लडका भाऊ ज्यादा कुछ पढालिखा नहीं था और विपन्नावस्थामें ही उसकी मौत हुई थी। वासुदेवराव चौधरी ने अपने पुत्र दिनकरराव को जिस व्यक्ति का जिक्र था वह व्यक्ति यही "भाऊ" था। पाथरी गाँव के भुसारी परिवार में उच्च आचार विचार के व्यक्ति पैदा हुए थे इस जानकारी के लिए इतने सबूत काफी है। भुसारी परिवार के हरीभाऊ भुसारी ही साईबाबा हो सकते है ?

यह सिध्दान्त सम्भव हो सकता है कि नहीं इसी के बारे में मैंने एक अनुभवी वकील और एक सुप्रसिध्द इतिहास तज्ञ के साथ चर्चा की थी। उन दोंनों ने मेरे उपरोक्त सिध्दान्त की विश्वसनीयता पर सहमति दी है।

इसी कारण इस सिध्दान्त के पक्ष में ज्यादा कुछ बिना लिखे मैं इस सिध्दान्त की स्वीकृति का फैसला पाठकों पर ही निर्धारित करता हूँ। यह लेख लिखते समय मुझे ज्ञात हुआ कि पाथरी गाँव के लोगों की साईबाबा के पावन स्मरणार्थ उनका एक उचित स्मारक स्थापित करने की इच्छा हैं। इस कार्य में ईश्वर उनकी सहायता करें यही सद्इच्छा व्यक्त करके यह लेख समाप्त करता हूँ।[३०]

संदर्भ और टिप्पणी

१) बी. व्ही. नरसिंहस्वामी, डिव्होटीज एक्स्पिरिअसिस ऑफ साईबाबा (अंग्रेजी) भाग १, ऑल इंडिया साई समाज, मद्रास, तीसरा संस्करण, १९६५ पृ. ४३, ४८.

२) एम. के गांधी, इन सर्च ऑफ दी सुप्रीम (अंग्रेजी) भाग १, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, १९६१ पृ. १४८.

३) एरिक एच् एरिकसन, गांधीज् टुथ (अंग्रेजी) डब्ल्यू. डब्ल्यू. नार्टन और कं. इंक, न्यूयॉर्क १९६९, पृ. ९.

४) बी. व्ही. नरसिंहस्वामी डिव्होटीज एक्स्पिरिअसिस ऑफ साईबाबा, भाग १, पृ. ९२.

५) गो. र. दाभोलकर, श्री साईसच्चरित, श्री. साईबाबा संस्थान शिरडी, ८ वा संस्करण १९७२, अ.७ पृ.१३.

६) स्वामी साईशरणानंद, श्री. साईबाबा (गुजराती) ६ संस्करण १९६६, पृ.१७. (अंग्रेजी) स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि. नई दिल्ली, १९९७ पृ. १३ और आर. बी. पुरंदरे डिव्होटीज एक्स्पिरिअसिस ऑफ साईबाबा भाग १, पृ. १०४ और ११४.

७) बी. व्ही. नरसिंहस्वामी तथैव भाग २ पृ. ४६.

८) गो. र. दाभोलकर, श्री. साईसच्चरित.

९) तत्रैव, हरी सीताराम दीक्षितजी का उपोद्‌घात पृ. १.

१०) श्री. साईलीला, स्फुट लेख अप्रैल १९२५ पृ. १७९.

११)बी. व्ही. नरसिंहस्वामी, लाईफ आफ साईबाबा (अंग्रेजी) भाग १, ऑल इंडिया साईसमाज, मद्रास १९५५ पृ. १३-१४.

१२)तत्रैव, पृ. १२.

१३)स्वामी साईशरणानंद, २५ अगस्त १९८२ की बुधवार रात १२ बजकर २० मि. ब्रह्मीभूत हुए। उनका नश्वर देह १४/१५ प्रकृतिकुंज सोसायटी, न्यू शारदा मंदिर रोड, अहमदाबाद-३८० ०१५ के आँगन में दफनाया गया और उसपर समाधि का निर्माण हुआ।

१४)श्री. साईलीला सितंबर १९७५ पृ. ४, ६.

१५)स्वामी साईशरणानंद, तथैव (गुजराती)१९६६, (अंग्रेजी)१९९७.

१६)तत्रैव (गुजराती)पृ. १४-१५, (अंग्रेजी)पृ. १०-११.

१७)तत्रैव (गुजराती)पृ. ६, (अंग्रेजी)पृ. ५.

१८)श्री. साईलीला, जुलाई-सितंबर १९४२ पृ. ३५६-३७२.

१९)एस. बी. दीक्षित -भारतीय खगोलशास्त्र का इतिहास दूसरा संस्करण १९३१ पृ. २६७,२६९ और २७८.

२०)लेफ्टिनेंट कर्नल सर वुल्सले हेग, दी हिस्टरी ऑफ दी निझामशाही, किंग्ज ऑफ अहमदनगर (अंग्रेजी) ब्रिटिश इंडिया प्रेस, बंबई १९२३ पृ. ७ (टीपणी)

२१)प्रो. एच्. के. शेखानी ओर डा. पी. एम्. जोशी-हिस्टरी ऑफ मेडीव्हल डेक्कन (१२९५-१७२४), (अंग्रेजी) भाग १, गव्हर्नमेंट ऑफ आंध्रप्रदेश, १९७५ पृ. २२५-२२८.

२२)लेफ्टिनेंट कर्नल जॉन ब्रिग, हिस्टरी ऑफ दी राइज ऑफ महामेडन पावर इन इंडिया टिल ए. डी. १६१२ (अंग्रेजी) भाग ३, लागमन रीस, ऑर्म ब्राउन व ग्रीन १८२९ पृ. १८९-९०.

२३)प्रो. एच. के. शेखानी और डा. पी एम. जोशी तथैव पृ. २२५-२२६.

२४)लेफ्टिनेंट कर्नल सर बुल्सले हेग, तथैव पृ. ७ (टीपणी).

२५)अक्तूबर १९९९ से दिनकरराव चौधरी संत साईबाबा मार्ग, एस. टी. स्थानक की पिछली बाजू के स्वयं के भवन में रहते है।

२६)संशोधन लेख में उद्‌घृत किया गया भुसारी परिवार का उपरोक्त वंशवृक्ष देखिए।

२७)प्रस्तुत लेखक १३ साल बाद १९९३ में जब पाथरी गए तब उन्हें पाथरी गाँव में काफी बदलाव नजर आए। गाँव का पहले का ग्रामीण रुप समाप्त हो रहा था। एक अनियोजित शहरीरुप का दर्शन सर्वत्र होता था। शहर में एक मुख्य सडक और चिनी फैक्टरी का निर्माण हुआ। गाँव की आबादी तिगुना हुई परंतु वहाँ पे नागरी सुविधाओं के विकास का अभाव दिखाई देता है।

२८)बी. व्ही. नरसिंहस्वामी, तथैव भाग १ पृ. १३.

२९)एम्. व्ही. प्रधान, श्री. साईबाबा आफ शिरडी (अंग्रेजी) श्री. साईबाबा संस्थान, शिरडी ७वॉं संस्करण १९७३, पृ. २५.

३०)शिरडी साईबाबा के पाथरी जन्मस्थान की भूमि श्री. साई स्मारक समिति के नाम श्री. वि. बा. खेर और दिनरराव चौधरीजी ने मिलकर खरीद ली और समिति का सार्वजनिक न्यास रुप में बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट ॲक्ट १९५७ के कानून अंतर्गत पी. टी. आर नं. ई-४३ (परभनी) करके नामांकन किया गया है। मंगलवार १९ अक्तूबर १९९९ के दशहरे के शुभमुहूर्त पर साईबाबा मंदिर, पाथरी गाँव के अप्रतिम मंदिर का विमोचन (श्री. के. व्ही. रमणी शिरडी साई

ट्रस्ट के संस्थापक और व्यवस्थापकीय विश्वस्त के करकमलोद्वारा) हुआ। उन्हीं के उदार अनुदान से इस सुंदर मंदिर का निर्माण किया गया। । मंदिर के गर्भगृह में श्री. साईबाबा की साढेपाँच फुट कांसे की सुवर्ण रंग की मूर्ति स्थापित की गई। बाबा की चांदी से आवृत संगमरमर की खड़ाऊँ पूजा हेतू स्थापित की गई है। गर्भगृह के आगे विशाल सभामंडप है। मंदिर के तहखाने में ध्यान मंदिर हैं। वहाँ पर बाबा का छः फुट का सुंदर और यथास्वरुप तैलचित्र है। तैलचित्र के एक तरफ स्वामी साई शरणानंद और दूसरी तरफ बल्बबाबा की तस्वीरें हैं। विपुल मात्रा में संगमरमर का इस्तेमाल बडी खूबी से मंदिर बनवाने में किया गया है।

✳✳✳✳

पाथरी साई जन्मस्थान मंदिर स्थापना

महत्वपूर्ण घटनाएँ

१) जून १९७५ - वि. बा. खेर की सपत्नीक पाथरी गाँव को भेंट।

२) जनवरी १९७६ - "ए सर्च फॉर दी बर्थ प्लेस ऑफ साईबाबा" वि. बा. खेर लिखित लेख साईलीला (अंग्रेजी) में प्रकाशित हुआ।

३) जून १९७८ - श्री. साई स्मारक समिति गठित करके समिति के नाम श्री. वि. बा. खेर और दिनकरराव चौधरी ने प्रा. र. म. भुसारी से साईबाबा जन्मस्थान भूमि खरीद ली और खरेदी पत्र का सब रजिस्ट्रार सेलू के कार्यालय में नामांकन कर दिया।

४) ३१ दिसंबर १९८० - श्री. साई स्मारक समिति पाथरी ई-४३ परभनी इस नंबर से सार्वजनिक न्यास (ट्रस्ट) के रुप में पंजीकृत की गई।

५) मार्च १९८१ - श्री. सुभाष दली आर्किटेक्ट द्वारा पाथरी सांई मंदिर का नक्शा बनवाया गया। उस नक्शे में 'प्रसव कक्ष' का निर्देश किया गया।

६) सितंबर १९८२ - वि. बा. खेर ने औरंगाबाद से नजदीकी गाँव धूपखेडे को भेंट दी। तदुपरान्त खेर दंपत्ती की औरंगाबाद गुलमंडी में बल्बबाबा से मुलाकात हुई। उस समय उन्होंने बल्बबाबा को २० रु. दक्षिणा दी। उसे स्वीकृत किये बल्बबाबा ने उन्हें आशीर्वाद दिया, "जमीन खरीद ली। बीस लाख का मंदिर बनेगा। उसे देखने देश के कोने कोने से लोग आंएगे। उसी बहाने आपका यहाँ आना जाना रहेगा और हमारी मुलाकातें होती रहेगी।"

७) १३ अक्तूबर १९९४ - विजया दशमी के दिन अब्दुल्लाखान दुर्राणी (अध्यक्ष पाथरी नगर परिषद) के करकमलों द्वारा मंदिर भूमिपूजा समारोह संपन्न हुआ ।

८) मई १९९५ - मंदिर की खुदाई का काम शुरु हुआं। खुदाई करते समय सान, मारुति और खंडोबा की मूर्तियाँ, पूजा के साधन, मिट्टी के दीप आदि चीजें बरामद हुई।

९) १० जून १९९५ - स्टेट बँक ऑफ हैद्राबाद के मैनेजर सूर्यभान सांगडे जी के करकमलो द्वारा बेड कॉंक्रिट नींव की शुरुआत हुई।

१०) १८ जुलै १९९५ - वि. बा. खेर, सीताराम धानु और आर्किटेक्ट सुभाष दली की पाथरी भेंट। खुदाई करते समय दो मेहराव और एक नागदा दिखाई दिया। इसी कारण आर्किटेक्ट दली के मत के अनुसार मंदिर के नीचे तहखाना बाँधने का निश्चित किया गया।

११) २० दिसंबर १९९५ - वि. बा. खेर और दूसरे दो आवेदकों द्वारा बॉम्बे पब्लिक ट्रस्टस् अॅक्ट १९५० धारा ५० ए के मुताबिक सहायक धर्मादाय आयुक्त परभनी ऑफिस में श्री. सांई स्मारक समिति पाथरी ई-४३ (परभनी) न्यास के व्यवस्थापन के लिए योजना बनाने हेतु अर्जी की गई।

१२) १ अक्तूबर १९९६ - से अपरिहार्य कारणों से दो सालों के लिए मंदिर निर्माण कार्य बंद रखा गया।

१३) १३ जुलै १९९८ - परभनी जिला कोर्ट में सर्व सम्मति से करार पत्र दाखिल किया गया और पहले विश्वस्त मंडली की स्थापना की गई। उसमें निम्नलिखित व्यक्तियों के नाम शामिल थे।

१) विश्वास बाल खेर
२) सीताराम सोमा धानु
३) दिनकर वासुदेव चौधरी
४) अब्दुल्लाखान दुर्राणी
५) कालीदास चौधरी
६) सूर्यभान तुलसीराम सांगडे
७) सुभाष राजाराम दली

१४) ९ अगस्त १९९८ - विश्वस्त मंडल की पहली सभा में वि. बा. खेर अध्यक्ष, दि. बा. चौधरी व्यवस्थापकीय और सू. तु. सांगडे खजीनदार के रुप में चुने गए।

१५) १९ अक्तूबर १९९९ - विजया दशमी - के. व्ही. रमाणी संगणक व्यवसायी, संस्थापक और व्यवस्थापकीय विश्वस्त, शिरडी सांई ट्रस्ट, चेन्नई, जिनके सौजन्य से पाथरी का भव्य और सुंदर सांई मंदिर साकार हुआ, उन्हीं के शुभ करकमलों द्वारा साईबाबा के महासमाधि के दिन मंदिर उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ।

१६) उपरोक्त उद्घाटन प्रसंग के लिए श्री. सीताराम धानू की अध्यक्षता में शिरडी साई प्राणप्रतिष्ठा समिति की स्थापना हुई। श्री. धानू उपरोक्त समिति की बंबई शाखा के अध्यक्ष थे। बंबई शाखा ने अत्युत्कृष्ट कार्य किया और साथ ही साथ काफी आर्थिक सहायता भी की।

स्वामी साईशरणानंद – अल्प परिचय

हृदय शुष्क म्हारुं, हंमेशनु नही भीनुं
कदी कदी प्रेम सरिता सूकी, लहरी भरती ओट चालू
आ दुष्ट हृदय म्हारुं।
हृदय लवण गळी प्रेमसरिते, निर्मळ जळ हमेशा वहे
शांत थई तद्रूप बनु हुं, हुं पण त्यारे क्यांथी रहे
हृदय एवुं ते क्यारे थशे ?
भेदाभेद बळी स्थूळ सूक्ष्म तो आपोआप खरी पडशे
त्यारे वामनडा तू मळशे साईस्वरुपमां निश्चे
हृदय खरुं त्यारे भिनशे।।

– 'श्री साईलीला', वर्ष ३, अंक २-३ पृष्ठ-२२५

मैं जून १९७४ में साईबाबा समाधि दर्शन हेतु शिरडी गया था। उस समय मेरे मन में बाबा के सहवासी किसी व्यक्ति से मिलने की इच्छा थी। इसी हेतु पूछताछ करने के बाद मुझे स्वामी सांईशरणानंद का नाम बताया गया। बाद में मैंने अहमदाबाद जाकर उनसे मुलाकात की। उस समय 'वामनडा' कौन है यह मेरी समझ में आ गया।

सांईबाबा ने स्वयं का आश्रम तथा पीठ स्थापित नहीं किया था। उन्होंने न कोई ग्रंथ लिखा और न किसी शिष्य को दीक्षा देकर अपनी गद्दी स्थापित करने का प्रयास किया। परंतु उनके कई भक्त थे और हैं। उनमें एक ऋषितुल्य और प्रसिध्दी पराङ्मुख व्यक्ति थे। उन्होंने 'नर करणी करे तो नर का नारायण हो जाएगा' इस कहावत को यथार्थ रुप से स्वयं की जिंदगी में सार्थक कर दिखाया। उस व्यक्ति का नाम है स्वामी साईशरणानंद। उनका पूरा नाम था श्री. वामनभाई प्राणगोविंद पटेल। उनका जन्म ५ अप्रैल १८८९ में सूरत जिले के इतिहास प्रसिध्द बार्डोली तालुका में मोटा नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री. प्राणगोविंद लालभाई पटेल

केंद्र सरकार के अबकारी (नमक) विभाग में नौकरी करते थे। कार्यालयीन कामकाज हेतू उनका कई बार तबादला भी होता था। वामनभाई की माँ सुश्री मणिगौरी तत्कालीन शिक्षातज्ज्ञ श्री. तुळजाराम सोमनाथजी की सुकन्या थी। वामनभाई के दादाजी लालभाई कई सालों से नवसारी गाँव के तलाठी (मुखियाँ) थे। नेक, अनुशासित और आत्मनिग्रही परंतु एक सहृदय सरकारी कर्मचारी के रुप में उनकी ख्याति थी। वामनभाई की दादी नंदुकुँवर अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी। संक्षेप में वामनभाई का खानदान शिक्षित और काफी धनवान था।

वामनभाई की प्राथमिक शिक्षा मोटा गाँव में शुरु हुई थी। इ. स. १८९६ में वामनभाई खेडा गाँव में उनके चाचा राम गोविंद रहते थे उनके साथ रहने हेतु गये। वहाँ पर उनकी प्राथमिक शिक्षा समाप्त हुई और माध्यमिक शिक्षा शुरु हुई। रामगोविंदजी कलेक्टर के कार्यालय में अव्वल स्थान के लिपिक थे। उन्होंने वामनभाई को रामरक्षा स्तोत्र सिखाया था और उनसे वह स्तोत्र कण्ठस्थ भी कर लिया था। उसी समय से वामनभाई की धार्मिक शिक्षा का प्रारंभ हुआ। इ. स. १८९९ में उनके पिता का तबादला अहमदाबाद गाँव में हुआ था। अंग्रेजी शिक्षा पाने हेतु अब वामनभाई अहमदाबाद गये। १९०३ में श्री. प्राणगोविंदजी का तबादला बंबई में हुआ था। बंबई में वे माटुंगा में रहते थे। वामनभाई का नाम बोरीबंदर के नजदीक न्यू हायस्कूल में दाखिल किया गया। कुछ ही दिनों बाद इस हायस्कूल का भर्डा न्यू हायस्कूल करके नामांकन हुआ। भर्डा जी स्वयं उसी हायस्कूल के माननीय प्रधानाचार्य थे। १९०५ में उसी स्कूल से वामनभाई मॅट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण हुए थे।

उस जमाने में बंबई में विल्सन महाविद्यालय, सेन्ट झेवियर्स कालिज और एलफिन्सटन कालिज ऐसे तीन महाविद्यालय थे। उन महाविद्यालयों के एक सत्र का शुल्क ३६रु.,४८रु. और ६४ रू. था। वामनभाई

के पिता सरकारी कर्मचारी होने के कारण उन्होंने अपने पुत्र को एलफिन्सटन महाविद्यालय में दाखिल किया। वामनभाई ने B.A. में तत्वज्ञान विषय चुना और B.A. की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। मनु सुभेदार जो आगे चलकर सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के सभासद हुए वे वामभाई के सहपाठी थे। १९११ में वामभाई एल्. एल्. बी. पास हुए। उसी दरम्यान उन्होंने जहांगीर गुलाबभाई बिलिमोरिया सॉलिसिटर फर्म में आर्टिकल क्लार्क करके अपना नाम दांखिल किया।

उस जमाने के परंपरा अनुसार वामनभाई की शादी १३ साल के उम्र में श्री. अंबाराम कृष्णशंकर शुक्ल की कलावती नामक कन्या से हुई थी। बचपन से ही वामनभाई की मनोवृत्ती धार्मिक थी और घर के धार्मिक वातारण के कारण उसे बढावा मिल गया। बचपन में ही वे रामरक्षा, विष्णुसहस्त्रनाम और आदित्य हृदय स्तोस्त्र का पठन करना सीखे थे। जब उनकी उम्र पाँच साल की थी तब उनके पिता धारासण के नमकसार पर काम कर रहे थे। वहाँ रहने की काफी असुविधा थी। तदुपरान्त कई महिनों से वामन आँव और अतिसार की विकारों से ग्रस्त था। उसी कारण वामन इतना कमजोर हुआ था कि उसके जीवित रहने की आशंका काफी कम थी। एक दिन शाम को वामन को गोद में लेकर उसकी माँ तंबू के बाहर बैठी थी तब अचानक उसके सामने एक फकीर आकर खडा हुआ। उसने कहा कि यह लडका बडा भाग्यशाली है। माँ ने तुरंत कहा,

"क्यो मजाक कर रहे हो ! फिलहाल तो इसे इतने जुलाब हो रहे हैं कि यह अब सिर्फ दो चार दिनों का ही साथी है ऐसी हम सभी की धारणा है।"

"नहीं, नहीं ऐसा मत कहो ! सचमुच यह लडका बडा भाग्यशाली है। उसके दाहिने काख में एक मस्सा और दाहिने बाजू एक तिल है।"

उस फकीर की बातें सुनकर माँ ने तुरंत झगुला उठाकर देखा तो सचमुच फकीर के कहे अनुसार निशान वहाँ पर थे। उन्हें देखते हुए उनकी माँ ने कहा कि "आपका कहना तो सच है परंतु उसकी बिमारी और तबियत कब सुधरेगी ?"

फकीर ने कहा, "मैं यह विभूति देता हूँ। यह उसके मुँह में रखो। सब ठीक हो जाएगा।"

स्वामी साई शरणानंद अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि तत्पश्चात अन्य उपचार किये बिना उनका स्वास्थ्य ठीक होने लगा और उनके मातापिता चिंतामुक्त हुए।

अपनी सात साल की उम्र तक वामन गाँव की पाठशाला में ही पढता था। सावन भादों में वह सुबह जल्दी जाग कर स्नान करके अपनी माता तथा बहन के साथ सोमनाथ महादेव के दर्शनार्थ जाता था। वहाँ मंदिर के बाहर उसकी मुलाकत एक फकीर से होती थी। वह फकीर उससे हँसी मजाक करता था। कभी कभी स्कूल जाते समय भी वामनभाई की उस फकीर से मुलाकात होती थी। १९११ में जब उनकी साईबाबा से प्रथम मुलाकात हुई तब वामनभाई को पता चला कि वह फकीर दूसरा कोई नहीं था बल्कि स्वयं साईबाबा ही थे। एक दिन बातों बातों में साईबाबा अपनी हथेलियाँ थोडी फैलाकर वामनभाई के बारें में हरि सीताराम दीक्षित को कहने लगे कि मैं इसे कई सालों से जानता हूँ। यह जब चूहे जैसा था तभी से उसकी और मेरी जानपहचान है।

यह सारी हकीकत वामनभाई ने अपनी माँ से कहीं तब उसने उन्हें धारासण का उपरोक्त किस्सा कह दिया।

वामनभाई जब इंटर आर्टस् के क्लास में थे तब संध्यापूजा आदि धार्मिक विधियों से उनका मन उठ गया। उन्होंने वे सारे कर्मकाण्ड करने बंद कर दिये। परंतु आदत से प्रातःस्नान के बाद वे स्तोत्रपठन करते थे। रात को भी सोने से पहले वे भगवद्गीता का पठन करते थे क्यों कि

उसी कारण उन्हें एक मानसिक शक्ति प्राप्त होती थी। भर्तृहरी का नीतिशतक और वैराग्यशतक पढकर उन्हें पूरा यकीन हुआ कि आर्यावर्त का ध्येय वैराग्य से ईश्वर प्राप्ति ही है। इन्टर आर्टस् में उन्हें तर्कशास्त्र में प्रथम श्रेणी के गुण प्राप्त हुए इसीकारण बी. ए. में उन्होंने तत्वज्ञान विषय पढाई हेतु चुना था। उस समय एलफिन्सटन महाविद्यालय में आर. एस्. मार्स तर्कशास्त्र और तत्वज्ञान के प्राध्यापक थे। जर्मन और ग्रीक भाषा में वे माहिर थे। प्राचीन तत्ववेत्ता कांट के ग्रंथ उन्होंने मूल भाषा में पढे थे। कांट का तत्वज्ञान पढकर वामनभाई का मन विचलित हुआ। असल में ईश्वर है या नहीं ? क्या ईश्वर एक सिर्फ मानसिक कल्पना है ? इस विश्व निर्मिती के पीछे एक जागृत नियामक शक्ति है या नहीं ? यदि नहीं तब क्या यह विश्व निर्मिती एक अप्रत्यशित घटना है ? ऐसे कई सवाल उनकें मन में पैदा हुए। इन सवालों के बारे में जितना ज्यादा वे सोचने लगे उतनी ही इस विश्वनिर्मिती के रहस्य की खोज और ईश्वर दर्शन की उनकी तीव्रता स्वामी विवेकानंद की तरह बढती गई। ऐसी मनोवस्था में उनके पिताजी उन्हें बालकृष्ण महाराज के पास ले गए। वामनभाई नें बालकृष्ण महाराज को स्पष्टता से कह दिया कि जो व्यक्ति उन्हें ईश्वर प्राप्ति करायेगा उसी को वे गुरु मानेंगे। अब वामनभाई को अपने मनःस्थित शंकाकुशंकाओं का निवारण करनेवाले महात्मा से मिलने की उत्सुकता निर्माण हुई। इस बात के लिए उन्हें ज्यादा समय इंतजार नहीं करना पडा। उसी दौरान उनके पिता साईबाबा का दर्शन लेकर लौटे थे और उन्होंने वामनभाई से कहा कि वे साईबाबा से मिल ले। उनके सारे सवालों को सुलझाने की शक्ति साईबाबा के पास है। यह सुनकर १० दिसंबर १९११ को वामनभाई ने शिरडी की ओर प्रस्थान किया। वामनभाई ने प्रथमदर्शन में साईबाबा को साष्टांग प्रणाम किया और अहो आश्चर्यम् साईबाबा ने दृढता से कहा, "हैं ईश्वर। क्यों ना कहते हो ? "

इस मुलाकात से वामनभाई के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन होनेवाला था।

बाद में १९१३ के गर्मियों के छुट्टियों में वामनभाई फिर से शिरडी गए थे। उस समय बाबा ने उन्हें आज कल करते करते करीबन ग्यारह महिने शिरडी में ठहराया। शिरडी के इस प्रदीर्घ आवास में साईबाबा उन्हें प्रतिदिन चार-पाँच घर भिक्षा माँगने भेजते थे। वामनभाई का पूर्व कर्म नष्ट करने हेतू साईबाबा ने उनसे गायत्री पुरश्चरण करवा लिया और उन्हे साधना करना सिखाया। ज्ञानेश्वरी और दूसरे तत्सम् ग्रंथो का अध्ययन करवा लिया। सांईबाबा ने उन्हें कई अध्यात्मिक अनुभूतियाँ प्रदान की। इतनाही नहीं बल्कि साईबाबा उन्हें बडे प्यार से "बाबू" , कह कर पुकारने लगे। एक दिन वामनभाई बिना कुछ कहे, "आप को कल जाना है" इन शब्दों में साईबाबा ने उन्हें शिरडी छोडने की आज्ञा दी।

शिरडी के इस दीर्घ सहवास के कारण वामनभाई के आर्टिकल क्लार्क के कार्यकाल में विच्छेद हुआ। बंबई में वापसी के बाद वे फर्म के सबसे पुराने पार्टनर जहांगीर से मिले। तब उन्हें कहा गया कि कार्यकाल में खंड होने के कारण पहले के तेरह मास छोडने पडेंगे और वामनभाई को फिर से शुरुआत करके दो साल पूरे करने पडेंगे।

इसी काल में पोलिस प्रोसिक्यूटर और नवसारी की सी. जे. एन. एल्. स्कूल में अध्यापक की नौकरी के लिए उन्हें बुलावा आया था। साईबाबा के मशविरे के अनुसार उन्होंने अध्यापक की नौकरी स्वीकृत की। एक साल की नौकरी के बाद वे फर्म के दूसरे साथी गुलाबभाई से मिले। उन्होंने वामनभाई को बंबई के हाईकोर्ट के न्यायाधिपति को आर्टिकल क्लर्क की अवधि में जो खंड पडा था उसकी माफी के लिए अर्जी करने को कहा। उस प्रकार की अर्जी करने के बाद न्यायाधिपति महोदय ने खंड अवधि माफ करके सिर्फ बचे हुए ग्यारह महिनें पूरे करने का हुक्म

दिया। बंबई हाईकोर्ट के इतिहास में इस प्रकार का दूसरा उदाहरण नहीं है ऐसा कहा जाता है।

१९१६ में एक दिन शिरडी जानेवाले कुछ लोगों के साथ साईबाबा को उपहार में माला, पुष्प आदि साहित्य देने हेतु वे रेलवे स्थानक गए थे परंतु एकाएक उनके मन में शिरडी जाने की तीव्र इच्छा निर्माण होने के कारण सिर्फ बदन कें कपडों पर बिना कुछ सामान लिए वे शिरडी गए और वहाँ पर वे तीन हफ्ते ठहरे थे। शिरडी में बाबा उनकी राह में आँखे लगाकर बैठे थे ऐसा उन्हें पता चला। उस समय शिरडी में बूटी साहब के घर का काम चालू था। जब वे वहाँ पर खडे थे तब एक बडी शिला उनके सिर और कंधे पर गिर पडी और इसी कारण कुछ समय तक वे बेहोश पडे रहें। बाबा की चिकित्सा से वे अल्प समय में ही होश में आये और कुछ ही दिनों में उनके जख्म भी भर आए। इसी हादसे के कारण वे कई सालों तक सॉलिसिटर के इम्तिहान को नहीं बैठे पाए।

मार्च १९१७ से जनवरी १९२१ तक उन्होंने अहमदाबाद की मॉडेल हायस्कूल के प्राचार्यपद की धुरा सम्हाली। तत्पश्चात् कुछ समय उन्होंने कांगा और सयानी नामक सॉलिसिटर फर्म में एसिस्टैंट के पद पर काम किया। उसके बाद मनु सूबेदार के पायोनियर रबर कंपनी में एक साल तक काम किया। नवंबर १९२३ में वामनभाई सॉलिसिटर की परीक्षा उत्तीर्ण हुए।

१९२४ से १९३२ तक उन्होंने अपना ज्यादा तर समय विधिक्षेत्र को समर्पित किया। जनवरी १९२४ से सवा साल उन्होंने नानावटी और कंपनी नामक सॉलिसिटर फर्म का कार्यभार सम्हाला। बाद में कुछ महीने उन्होंने चोक्सी और कंपनी में काम किया। जुलै १९२५ से सितंबर १९२६ तक वे परळकर ॲण्ड पटेल नामक फर्म के हिस्सेदार भी

थे। पुनश्च उन्हें अहमदाबाद के मॉडेल स्कूल में प्राचार्य पद ग्रहण करने की इच्छा हुई किंतु १९२९ में वे बंबई के विधि महाविद्यालय में प्रोफेसर हुए। कंपनी और इनसॉलवॅनसि की कानून पर उन्होंने किताबें भी लिखी। एक साल के बाद उन्होंने यह नौकरी छोडकर क्राफर्ड वेली और कंपनी जो उस समय की एक सुप्रसिध्द सॉलिसिटर फर्म थी वहाँ पर १९३२ तक काम किया। बाद में उन्होंने बंबई को अलविदा किया। १९३५ से १९५० तक उन्होंने उमरेठ गाँव हायस्कूल के प्राचार्यपद को विभूषित किया।

सॉलिसिटर और स्कूल के प्रधानाचार्य के अपने कार्यकाल में उन्होंने दफ्तर की सारी जिम्मेदारियाँ बहुतही बढिया तौर पर निभायी। परंतु संसार मे उनका व्यवहार कमलपत्रवत् था क्यों कि उनका मन ईश्वर चरणों में-गुरु चरणों में जुडा हुआ था। जून १९२४ से सितंबर १९२६ तक का उनका जीवनकाल कडी तपश्चर्या का था ऐसा अपनी जीवनी में स्वामी शरणानंदजी लिखते है। इस कालावधि में व्यावहारिक दृष्टि से उन्हें अच्छी धनप्राप्ति नहीं हो सकी परंतु उन्हें स्वयं की परमार्थिक प्रगति पर संतोष था।

उनकी पत्नी सौभाग्यवती कलावती बहन का १९५१ में देहान्त हो चुका था। उन्हें एक पुत्र और एक कन्या भी थी। पत्नी पश्चात् पुत्र की भी मृत्यु हुई थी। साईबाबा की कृपा से उनकी कन्या की गृहस्थी उत्तम थी। उनका नाम सौ. त्रिवेणीबेन जोशी था। उन्हें भी साईबाबा के प्रति असीम श्रध्दा और निष्ठा थी। उन्होंने अहमदाबाद के सांई मंदिर में बाबा की काफी सेवा भी की थी। १ अगस्त १९७८ में उनका भी देहान्त हो गया।

वामनभाई अक्सर स्फुटलेखन करते थे। उन्होंने दासगणू की साईबाबा के गुणवर्णन पर 'स्तवनमंजिरी' और 'अर्वाचीन भक्त व संतलीलामृत' के ४ थे अध्याय का गुजराती में अनुवाद किया था। परंतु

१९४६ में उन्होंने स्वतंत्र रचना की शुरुआत की। इसी वर्ष में उन्होंने 'श्री साईबाबा' नामक ५११ पृष्ठों में साईबाबा की रसपूर्ण जीवनी गुजराती भाषा में लिखी। इस ग्रंथ को इतनी मान्यता प्राप्त हुई कि १९६६ तक उसकी ६ आवृत्तियाँ प्रकाशित हुई। साईबाबा की जीवनी का गाथा समझने की इच्छा धारकों के लिए यह ग्रंथ मेवा ही है। १९५२ में वामनभाई ने 'श्री. साई लीलाख्यान' यह पद्यमय ग्रंथ गुजराती भाषा में विमोचित किया। उपरान्त श्री अन्नासाहेब दाभोलकरजी का श्री. साईसच्चरित ग्रंथ उन्होंने ओवी छंद में अनुवाद करके गुजरात के साई भक्तों को सदैव उपकृत करके रखा है।

गुजरात में कई सालों से सामाजिक, धार्मिक और अध्यात्मिक सद्भिरुची वृध्दिंगत करने के लिए 'सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय' नामक संस्था कार्यरत है। संस्था का एक विशाल मुद्रणालय अहमदाबाद में हैं। श्री. मनु सूबेदारजी अपनी आखिरी सांस तक उसके प्रमुख थे। यह संस्था 'अखंडानंद' नामक एक मासिक का प्रकाशन करती थी। उपरोक्त संस्था सस्ता, उत्तम और विपुल वाङ्मय गुजरात की जनता को उपलब्ध कर देती है। ११/१२/१९५० से मनु सूबेदारजी ने वामनभाई को इस संस्था में समा लिया। इसी संस्था ने वामनभाई की कई किताबें प्रकाशित की है। भगवद्गीता श्री. शंकराचार्य, मनुष्यधर्म, सती सावित्री, श्री.प्रल्हाद, अंबरीष, सुकदेव, गजेन्द्र मोक्ष, संत ज्ञानदेव, धर्मकथा, चांगदेव पासष्टी, नित्यपाठ, जप अने नामस्मरण, श्री. रामकृष्ण वचनामृत, सिध्दान्तमाला आदि किताबें उन प्रकाशित किताबों में प्रमुख हैं। वामनभाई के मन में सारे सांसारिक पाशों से मुक्त होकर सन्यासाश्रम स्वीकार करने की इच्छा कई दिनों से थी। इसी हेतु उन्होंने ३१ मार्च १९५३ में स्वयं को सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय की जिम्मेदारियों से मुक्त करवा लिया। और आषाढ शुध्द प्रतिपदा १२ जुलै १९५३ में डाकोर के संन्यासी मठ में जाकर संन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया । तद्नुसार १२-७-१९५३

ह विधि समाप्त हुई। अब वामनभाई ने स्वामी 'श्री साईशरणानंद' नाम किया। आचार्य द्वारा जिन महावाक्यों का उपदेश होता है वह उपदेश बा से वामनभाई पहले ही प्राप्त कर चुके थे। साईबाबा ने उन्हें उन तत्वों का अनुमानसहित ज्ञान बरसों पहले ही प्रदान किया था। इसी वामनभाई ने संन्यास ग्रहण करते समय किसी को भी अपना गुरु किया ऐसा उन्होंने स्वयं लिखकर रखा है। तत्पश्चात २९ साल उन्होंने और तपस्वी जीवन व्यतीत किया। २५ अगस्त १९८२ मध्यरात्र समाप्त पर २० मिनिट बाद, अंग्रेजी कालगणना के अनुसार गुरुवार को स्वामी शरणानंद आत्मतत्व में विलीन होकर ब्रह्मीभूत हुए। अहमदाबाद में लिखित पते पर उनकी समाधि हैं :-

१४/१५, प्रकृतिकुंज सोसायटी,
न्यू शारदा मंदिर रोड,
श्रेयस हाइस्कूल के सामने,
अहमदाबाद - ३८००१५.

उनके निर्वाण पश्चात् 'साईनाथ ने शरणे' (१९८३) परिमल (१९८६) और सिध्दामृत (१९८७) यह तीन किताबें प्रसिध्द यह सारी किताबें उनके आत्मज्ञान की साक्षी है। उनमें अपने पांडित्य लेषमात्र भी अभिमान नहीं था। उनका व्यक्तिमत्व लुभानेवाला था। वे व से विनयशील थे। साई शरणानंद की तपश्चर्या विपुल थी और का अधिकार भी बडा था। उनके सहवास में आए हुए सभी साई भक्तों इस बात की जानकारी थी। उन्हें कई सिध्दियाँ भी प्राप्त हो चुकी उन्होंने कभी भी इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटा था। श्री. साईसच्चरित ४० वे अध्याय में साईबाबा नें डहानू के मामलेदार श्री. बालासाहब देव व्रतसमाप्ति का आमंत्रण स्वीकृत करते समय सूचित किया था कि बाबा , बापूसाहब जोग और एक तीसरा वहाँ पर उपस्थित होकर खाना गे। उनमें से तीसरे वामनभाई थे इस बात की जानकारी बहुत ही कम

लोगों को है। साईबाबा ने दो शिष्यों के साथ बंगाली संन्यासी के भेष में जाकर किस प्रकार अपना वचन निभाया परंतु मामलेदार देव मायापटल के कारण बाबा की लीला को समझ नहीं पाए यह सरस कथा उपरोक्त अध्याय में है। प्रसिध्दी मलसमान, है यह वामनभाई की स्पष्टोक्ति थी। इसी कारण प्रसिध्दी के उजाले से वे हमेशा दूर रहे यही उनकी महानता की निशानी है।

श्री बल्बबाबा - अल्प परिचय

बल्बबाबा यह व्यक्ति अपने जमाने में औरंगाबाद में एक कुतूहल का विषय थे। वहाँ के कुछ हिंदु लोग उन्हें पाकिस्तानी गुप्तचर मानते थे और मुस्लिम समाज के कुछ लोग उन्हें पुलिस का आदमी मानते थे। प्रतिवासी लोग उन्हें एक अवलिया के रुप में जानते थे। वे प्रतिदिन दोपहर को औरंगाबाद के गुलमंडी के मारुति मंदिर में आते थे। विशेष तौर पर औरंगाबाद के टूरिस्ट गाईड पर्यटकों को एक अवलिया का विलक्षण मधुर हास्य देखने हेतु वहाँ ले जाते थे।

श्री. वसंत न. लिमये सी. आई. डी. इंटलिजन्स, विभाग से ३८ साल की सेवा के बाद सीनियर इंटलिजन्स ऑफिसर के पद से दिसंबर १९९४ में निवृत हुए। वे निवृत्ति के बाद औरंगाबाद में स्थायिक हुए थे। वे स्वयं बल्बबाबा को जानते थे। उन्होंने बल्बबाबा का नाम, ठिकाना, पेशा, साधना, सिध्दी, पोशाक और समाधि के बारे में जानकारी हासिल की थी। बल्बबाबा के बारे में उन्होंने जो जानकारी दी थी उसी के आधार से निम्नलिखित विचारों का संकलन किया गया है। उनके मतानुसार बल्बबाबा का पूरा नाम आसाराम यशवंत उर्फ येसूजी बनकर था। बावरा गाँव के माली समाज के एक परिवार में वे पैदा हुए थे। बावरा गाँव औरंगाबाद जिले के सिल्लोड तालुका में औरंगाबाद से ५५ कि. मी. दूरी पर है। बावरा गाँव में एक बालाजी का और गणपति का पुरातन मंदिर है। आसाराम हरणाबाई के पुत्र थे। उन्हें पुतलाबाई नामक सौतेली माँ भी थी।

आसाराम की शादी सौ. मथुरा से हुई थी। उन्हे एक बच्चा भी था। परंतु पैदा होने के दो महिने बाद में ही उस बच्चे की मौत हो गयी। इसी कारण १९४७ में गृहपरिवार छोडकर आसाराम औरंगाबाद गए। औरंगाबाद में कुछ दिन वे ताँगा चलाते थे। बाद में वे एक कपडा मिल में भी नौकरी करते थे। मिल में दुर्घटना होने के कारण उन्होंने नौकरी छोड दी और वे नासिक चले गए। वहाँ से उनका भतीजा किसनराव बनकर उन्हें

वापस औरंगाबाद ले आए और अपने चाचा को उन्होंने अपने पास रख लिया। कचरुजी स्टेशन रोड के न्यू पंजाब होटल में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत थे और उस्मानपुर मुहल्ले में रहते थे।

उसके बाद आसारामजी ध्यान धारणा और साधना करने हेतु कचनेर गये। यह स्थान औरंगाबाद बीड मार्ग पर अंदाजन ४० कि. मी. पर है। वहाँ शिवजी और माताजी के मंदिर है। आसारामजी रुढार्थ से शिक्षित नहीं थे परंतु उनकी अध्यात्मिक साधना से उन्हें वाचासिध्दी प्राप्त हुई थी। आध्यात्म के अभ्यास के कारण वे अध्यात्मशास्त्र में भी काफी पहुँचे हुए थे ऐसा माना जाता है। कई लोगों को उनके आध्यात्मिक सामर्थ्य का अनुभव आया था। उन लोगों में स्वयं लेखक श्री. वि. बा. खेर भी शामिल है।

कचनेर से औरंगाबाद लौटने पर थोडे दिन उन्होंने अपना डेरा गाँव के कब्रिस्तान की खाली जगह पर डाला था। उन्हें वहाँ पर समाजकंटको द्वारा उपद्रव होने के कारण वे औरंगाबाद में पैठणद्वार के नजदीक 'कानफाटया मारुती' मंदिर में १९५६-५७ के बीच रहने हेतु आये थे। इस मंदिर का छत पहले पत्रे का था। उस छत के नीचे बल्बबाबा सोते थे।

आसारामजी की वेशभूषा अत्यंत अनोखे ढंग की थी। वे सोलापुरी चद्दर का या कम्बल का गर्दन से एडियों तक का अँगरखा पहनते थे। उनके सर पे 'वासुदेव' की तरह मयूरपंखो की टोपी होती थी। उस टोपी पर वे रंगरंगीले और कई आकार के बल्ब, मयूरपंख, कौडियाँ और रुद्राक्ष की मालाएँ बाँधते थे। अपने दोनो हाथों में कई विभिन्न धातुओं के तोडे पहनते थे। टायर से बनाए हुए फॅन्सी चप्पल पहनते थे। उनके इस प्रकार की पोशाक से उन्हें लोग बल्बबाबा नाम से पुकारते थे।

दोपहर के समय वे गुलमंडी विभाग के किसी भी दुकान के सामने

जाकर खडे होते थे। तब उस दुकान की खरीददारी में बढोत्री होती थी ऐसा लोगों का अनुभव था। वहाँ समीप में ही एक मेवाडी होटल था। उस होटल के मालिक को बल्बबाबा के प्रति बहुत ही आदर था। उन्होंने होटल के नौकरों को सूचित करके रखा था कि बल्बबाबा कभी भी होटल में पधारेंगे तो उस समय उनका यथोचित सम्मान और खातिरदारी होनी चाहिए।

१९८२ के सितंबर में औरंगाबाद के टूरिस्ट गाईड श्री. के. के. जुंवडे, वि. बा. खेर और उनकी पत्नी को लेकर बल्बबाबा के दर्शन हेतू गए थे। 'बहुत ही कम बोलनेवाले व्यक्ति' करके बल्बबाबा की ख्याति थी। फिर भी लगातार ४५ मिनट तक उन्होंने खेर दंपती को धारा प्रवाह शुध्द वेदान्त का उपदेश किया था। उस दौरान उन्होंने कबीर के दोहे, साकी आदि का यथोचित इस्तेमाल भी किया था। गोष्ठी के अंत में खेरजी ने बल्बबाबा को प्रणाम किया और २० रुपये दक्षिणा दी। तब उन्होंने आपके हाथों पाथरी में बीस लाख रुपयों का मंदिर कार्य संपन्न होगा और देश के कोने कोने से लोग वहाँ दर्शन के लिए आएँगे ऐसा आशीर्वाद दिया। सचमुच वास्तव में साकार हए साई मंदिर को देखने का भाग्य खेरजी को मिला यह एक असाधारण घटना है।

दिनांक ७ अक्तूबर १९९१ (भाद्रपद कृष्ण पक्ष, सोमवती अमावस के दिन) सोमवार को सूर्योदय के समय बल्बबाबा का देहान्त हुआ। वे उस समय प्लाट नं. १५२ गांधी नगर, फायरब्रिगेड के पीछे एक कमरे में रहते थे। बल्बबाबा की जन्मतिथि ठीक तरह से मालूम न होने के कारण उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल ही है। मृत्यु समय उनकी आयु ८०-८५ साल होगी ऐसा माना जाता था। उनके मृत्युस्थान पर उनके समाधि का निर्माण किया गया है। उस समाधि के ऊपर जहाँपर वे रहते थे वहीं पर उनकी बडी तस्वीर और उन्होंने इस्तेमाल की हुई पोशाक, पलंग, लकडे का झूला, थाली, कटोरा, लोटा आदि चीजें सुयोग्य तरीके से रखी गई है।

* * * *

पाथरी साई जन्मस्थान मंदिर में मनाए जानेवाले वार्षिक समारोह

तीन दिन के समारोह

१) श्री रामनवमी (चैत्र शुध्द ९)

२) व्यास-गुरु पौर्णिमा (आषाढ)

३) विजया दशमी, दशहरा (अश्विन शुध्द १०)

एक दिन के समारोह

१) हनुमान जयंती (चैत्र पूर्णिमा)

२) स्वामी साईशरणानंद जयंती (५ अप्रैल)

३) श्रीकृष्ण जयंती (श्रावण वद्य ८)

४) स्वामी साईशरणानंद पुण्यतिथी (२६ अगस्त)

५) श्री. बल्बबाबा पुण्यतिथि (७ अक्तूबर)

६) श्री. दत्तात्रेय जयंती (मार्गशीर्ष पूनम)

****

श्री साईबाबा अष्टोत्तरशत नामावलि :

(यह नामावली चेन्नई के आल इंडिया साई समाज ट्रस्ट के संस्थापक श्री. बी. व्ही. नरसिंहस्वामी की निर्मिति है। यह नामावलि श्री साई की मूर्ति अथवा सिक्के को अभिषेक करते समय पठण हेतु उपयुक्त होगी)

१) ॐ श्री साई नाथायः नमः ।
श्री सांईनाथ को प्रणाम ।

२) ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः ।
लक्ष्मीनारायणरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

३) ॐ कृष्णरामशिवमारुत्यादिरुपाय नमः ।
कृष्ण, राम, शिव, मारुति आदिरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

४) ॐ शेषशायिने नमः ।
शेष नागपर निद्रा करनेवाले विष्णुरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

५) ॐ गोदावरीतटशीलधीवासिने नमः ।
गोदावरी तटः स्थित शीलधी-शिरडी रहनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

६) ॐ भक्तहृदालयाय नमः ।
भक्तों के हृदयानिवासी सांईनाथ को प्रणाम।

७) ॐ सर्वहृन्निलयाय नमः ।
समस्तों के हृदयानिवासी सांईनाथ को प्रणाम।

८) ॐ भूतावासाय नमः ।
समस्त प्राणिमात्र निवासी सांईनाथ को प्रणाम।

९) ॐ भूतभविष्यभ्दाव वर्जिताय नमः ।
भूत भविष्य घटनाओं से परे सांईनाथ को प्रणाम।

१०) ॐ कालातीताय नमः ।
काल के परे सांईनाथ को प्रणाम।

११) ॐ कालाय नमः ।
काल स्वरुप सांईनाथ को प्रणाम।

१२) ॐ कालकालाय नमः ।
कालतत्व के कालरुप सांईनाथ को प्रणाम ।

१३) ॐ कालदर्पदमनाय नमः ।
कालदर्प का दमन करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१४) ॐ मृत्युंजयाय नमः ।
मृत्यु को जीतनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१५) ॐ अमर्त्याय नमः ।
अमर रहनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१६) ॐ मर्त्याभयप्रदाय नमः ।
मृत्यु से भयभीत जीवों को अभय देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१७) ॐ जीवाधाराय नमः ।
जीव के आधारमूल सांईनाथ को प्रणाम ।

१८) ॐ सर्वाधाराय नमः ।
सारे जगत् के आधारभूत सांईनाथ को प्रणाम ।

१९) ॐ भक्तावनसमर्थाय नमः ।
भक्तों की रक्षा के लिए समर्थ सांईनाथ को प्रणाम ।

२०) ॐ भक्तावनप्रतिज्ञाय नमः ।
भक्तरक्षण की प्रतिज्ञा करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२१) ॐ अन्नवस्त्रदाय नमः ।
अन्नवस्त्र देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२२) ॐ आरोग्यक्षेमदाय नमः ।
आरोग्य और स्वस्थता देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२३) ॐ धनमाङ्गल्यप्रदाय नमः ।
धन और मांगल्य प्रदान करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२४) ॐ ऋध्दिसिध्दिदाय नमः ।
संपन्नता और यश देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२५) ॐ पुत्रमित्रकलत्रबन्धुदाय नमः ।
पुत्र, मित्र, पत्नी और बांधव देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२६) ॐ योगक्षेमवहाय नमः ।
अप्राप्य चीजों की प्राप्ति और प्राप्त चीजों की रक्षा करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

२७) ॐ आपद्‍बान्धवाय नमः ।
आपत्तिनिवारण पिता सांईनाथ को प्रणाम ।

२८) ॐ मार्गबन्धवे नमः ।
जीवनयात्रा में संबंधित सांईनाथ को प्रणाम ।

२९) ॐ भुक्तिमुक्तिस्वर्गापवर्गदाय नमः ।
भोग, मुक्ति और जन्ममृत्यु के चक्र से छुटकारा देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

३०) ॐ प्रियाय नमः ।
प्रिय स्वरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

३१) ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः ।
प्रीतिभावना बढानेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

३२) ॐ अन्तर्यामिणे नमः ।
अंतकरण में स्थित होकर हुकूमत चलानेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

३३) ॐ सच्चिदात्मने नमः ।
सत् ओर चित् युक्त आत्मारुप सांईनाथ को प्रणाम ।

३४) ॐ नित्यानंदाय नमः ।
नित्य आनंदरुप सांईनाथ को प्रणाम ।

३५) ॐ परमसुखदाय नमः ।
अतिश्रेष्ठ सुख देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

३६) ॐ परमेश्वराय नमः ।
परमेश्वर रुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

३७) ॐ परब्रह्मणे नमः ।
परब्रह्मरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

३८) ॐ परमात्मने नमः ।
परमात्मरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

३९) ॐ ज्ञानस्वरुपिणे नमः ।
ज्ञानस्वरुप सांईनाथ को प्रणाम ।

४०) ॐ जगतः पित्रे नमः ।
जगत् पिता सांईनाथ को प्रणाम ।

४१) ॐ भक्तानां मातृधातृपितामहाय नमः ।
भक्तों की माता, पालनकर्ता और पितामह सांईनाथ को प्रणाम ।

४२) ॐ भक्ताभयप्रदाय नमः ।
भक्तों को अभय देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४३) ॐ भक्तपराधीनाय नमः ।
भक्तों के अधीन रहनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४४) ॐ भक्तानुग्रहकातराय नमः ।
भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए सदैव कातर होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४५) ॐ शरणागतवत्सलाय नमः ।
शरणागत वत्सल सांईनाथ को प्रणाम ।

४६) ॐ भक्तिशक्तिप्रदाय नमः ।
भक्ति और शक्ति देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४७) ॐ ज्ञानवैराग्यदाय नमः ।
ज्ञान और वैराग्य देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४८) ॐ प्रेमप्रदाय नमः ।
प्यार देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

४९) ॐ संशयहृदय दौर्बल्य पापकर्मवासना क्षयकराय नमः ।
संशय, चित्त दुर्बलता, पापकर्म करने की इच्छा नष्ट करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५०) ॐ हृदयग्रन्थिभेदकाय नमः ।
हृदय की गाँठ तोडनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५१) ॐ कर्मध्वंसिने नमः ।
कर्म एवं कर्म फलों का नाश करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५२) ॐ शुध्दसत्वस्थिताय नमः ।
शुध्द सत्वगुण स्थित सांईनाथ को प्रणाम ।

५३) ॐ गुणातीत गुणात्मने नमः ।
गुणातीत और गुणधारण करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५४) ॐ अनन्तकल्याणगुणाय नमः ।
अनन्त कल्याण करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५५) ॐ अमितपराक्रमाय नमः ।
अत्यंत पराक्रमी सांईनाथ को प्रणाम ।

५६) ॐ जयिने नमः ।
हमेशा विजयी होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५७) ॐ दुर्धर्षाक्षोभ्याय नमः ।
बाहयतः अनियंत्रित परंतु अंतर्यामी अक्षोभ्य सांईनाथ को प्रणाम ।

५८) ॐ अपराजिताय नमः ।
कभीभी और किसी से भी पराजित न होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

५९) ॐ त्रिलोकेषु अविघातगतये नमः ।
तीनों लोक में जिसकी गति बिनावरोध हैं उस सांईनाथ को प्रणाम ।

६०) ॐ अशक्यरहिताय नमः ।
कुछ भी अशक्य न होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

६१) ॐ सर्वशक्तिमूर्तये नमः ।
सर्व शक्तियों के साक्षात्रुप सांईनाथ को प्रणाम ।

६२) ॐ सुरुपसुन्दराय नमः ।
सुरुप और सुंदर सांईनाथ को प्रणाम ।

६३) ॐ सुलोचनाय नमः ।
सुंदर आँखोवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

६४) ॐ बहुरुप विश्वमूर्तये नमः ।
साक्षात् बहुरुपी विश्व मूर्ति सांईनाथ को प्रणाम ।

६५) ॐ अरुपाव्यक्ताय नमः ।
निराकर और अव्यक्त सांईनाथ को प्रणाम ।

६६) ॐ अचिन्त्याय नमः ।
कल्पनातीत सांईनाथ को प्रणाम ।

६७) ॐ सूक्ष्माय नमः ।
सूक्ष्मरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

६८) ॐ सर्वान्तर्यामिणे नमः ।
सारे लोगों के अंतःकरण निवासी सांईनाथ को प्रणाम ।

६९) ॐ मनोवागतीताय नमः ।
मन और वाणी के अतीत सांईनाथ को प्रणाम ।

७०) ॐ प्रेममूर्तये नमः ।
साक्षात प्रेमरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

७१) ॐ सुलभदुर्लभाय नमः ।
सुलभतासे और दुर्लभतासे प्राप्ति होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

७२) ॐ असाहयसहायाय नमः ।
असहाय को मदद करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

७३) ॐ अनाथनाथ दीनबन्धवे नमः ।
अनाथों का नाथ और दीन बन्धु सांईनांथ को प्रणाम ।

७४) ॐ सर्वभारभृते नमः ।
भक्तों का सारा बोझ उठानेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

७५) ॐ अकर्मानेक कर्म सुकर्मिणे नमः ।
भक्तों के कई अकर्म (कर्म करते समय जो स्वयं कर्ता यह भावना नही रखता ऐसे कर्म) ओर सुकर्मरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

७६) ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः ।
जिसका श्रवण और कीर्तन पुण्यमय है ऐसे सांईनाथ को प्रणाम ।

७७) ॐ तीर्थाय नमः ।
साक्षात् तीरथरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

७८) ॐ वासुदेवाय नमः ।
साक्षात् वासुदेवरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

७९) ॐ सतां गतये नमः ।
सत्पुरुषों की गति होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

८०) ॐ सत्परायणाय नमः ।
सत्पुरुषों का अंतिम ध्येय होनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

८१) ॐ लोकनाथाय नमः ।
सारे लोगों के स्वामी सांईनाथ को प्रणाम ।

८२) ॐ पावनानघाय नमः ।
पवित्र और पापरहित सांईनाथ को प्रणाम ।

८३) ॐ अमृततांशवे नमः ।
अमृतकिरणरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

८४) ॐ भास्करप्रभाय नमः ।
सूर्यसमान तेजस्वी सांईनाथ को प्रणाम ।

८५) ॐ ब्रह्मचर्य तपश्चर्यादि सुव्रताय नमः ।
ब्रह्मचर्य, तपश्चर्या आदि सुव्रतरुपी सांईनाथ को प्रणाम ।

८६) ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः ।

सत्य धर्म पर निष्ठा रखनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

८७) ॐ सिध्देश्वराय नमः ।

सिध्दों के ईश्वर सांईनाथ को प्रणाम ।

८८) ॐ सिध्दसंकल्पाय नमः ।

जिसके संकल्प सदैव पूरे होते हैं ऐसे सांईनाथ को प्रणाम ।

८९) ॐ योगेश्वराय नमः ।

योगिजनों के ईश्वर सांईनाथ को प्रणाम ।

९०) ॐ भगवते नमः ।

भगवान सांईनाथ को प्रणाम ।

९१) ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।

भक्तों के प्रति वत्सलरुप धारण करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

९२) ॐ सत्पुरुषाय नमः ।

सत्पुरुष सांईनाथ को प्रणाम ।

९३) ॐ पुरुषोत्तमाय नमः ।

पुरुषों में उत्तम सांईनाथ को प्रणाम ।

९४) ॐ सत्यतत्वबोधकाय नमः ।

सत्य तत्वों का उपदेश करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

९५) ॐ कामादिषड्वैरिध्वंसिने नमः ।

काम आदि षड्रिपुओं का ध्वंस करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

९६) ॐ अभेदानन्दानुभवप्रदाय नमः ।

अद्वैत के आनंद का अनुभव देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

९७) ॐ समसर्वमतसंमताय नमः ।

सारे धर्मसमान है इस तत्व को संमति देनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

९८) ॐ श्री दक्षिणामूर्तये नमः ।

श्री दक्षिणमूर्तिरुपी-दक्षिण दिशा मे मुख होनेवाले शिवस्वरुप सांईनाथ को प्रणाम।

९९) ॐ श्री वेंकटेशरमणाय नमः ।

श्री वेंकटेश ही जिसका सुख है उस सांईनाथ को प्रणाम ।

१००) ॐ अद्भुतानन्दचर्याय नमः ।

अलौकिक आनंद का सदैव अनुभव लेनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०१) ॐ प्रपन्नातिहराय नमः ।

शरणागत की पीडा हरण करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०२) ॐ संसार सर्वदुःख क्षयकराय नमः ।

सारे सांसारिक दुखों का नाश करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०३) ॐ सर्ववित्सर्वतोमुखाय नमः ।

सबकुछ जाननेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०४) ॐ सर्वान्तर्बहिःस्थिताय नमः ।

संपूर्ण जगत् के अंदर और बाहर रहनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०५) ॐ सर्वमङ्गलकराय नमः ।

सर्व मङ्ल करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०६) ॐ सर्वाभीष्टप्रदाय नमः ।

सारी मनोकामना पूरी करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०७) ॐ समरससन्मार्गस्थापनाय नमः ।

ब्रह्म तादात्म्य का सन्मार्ग स्थापन करनेवाले सांईनाथ को प्रणाम ।

१०८) ॐ श्री समर्थ सद्गुरुसाईनाथाय नमः ।

श्री समर्थ और सद्गुरु सांईनाथ को प्रणाम ।

नामस्मरण का महत्त्व

- ❖ प्रारब्ध की तीव्रता कम होती है।
- ❖ प्रारब्ध सहने की क्षमता बढती है।
- ❖ सांसारिक समस्याएँ कम होती है।
- ❖ हालात सहने की क्षमता बढती है।
- ❖ समाधान प्राप्ति होती है।
- ❖ वास्तु शुध्दि होती है।
- ❖ घर में शांति महसूस होती है।
- ❖ प्रेमभाव निर्माण होता है।
- ❖ घर में भगवान की मौजूदगी रहती है।
- ❖ संकटों का सामना कर सकते है।
- ❖ चिंता नष्ट होती है, कायरता का लोप होता है।
- ❖ स्वभाव में परिवर्तन होता है।
- ❖ जरुरतें कम होती है।
- ❖ भगवान से मिलन होता है।

❋❋❋❋

अहंभाव कैसे कम करें ?

- ❖ दिनभर की बातचीत में "मैं" "मेरा", "मुझे" इन शब्दों का कम इस्तेमाल करें।
- ❖ हर एक कृति ईश्वरार्पण करने से स्वयं के अहं की कमी होती है।
- ❖ कामयाबी का कारण सिर्फ मेरी कृति है ऐसा कभी सोचना भी मत।
- ❖ फल की अपेक्षा रखे बिना कार्य करने से स्वयं के अहं की कमी होती है।
- ❖ स्वयं की श्रध्दा बढने से अहं अपने आप कम होता है।
- ❖ स्वयं की सुन लेने की क्षमता बढने से अहं की कमी होती है।
- ❖ दूसरों को सिखाने के बजाय हमेशा दूसरों से सीखते रहना चाहिए।
- ❖ मुझे कुछ समझता नहीं है इस प्रकार की धारणा से अहं की कमी होती है।
- ❖ दूसरों के गुणों का चिंतन करने से स्वयं के अहं की कमी होती है।
- ❖ मेरे मन में सूक्ष्म रुप में भी अहंभाव नही है ऐसी सोच भी सूक्ष्म अहं निर्माण करती है।
- ❖ दूसरों की सेवा करने से स्वयं का अहं कम होता है।

❖ अर्पण करने से, कृतज्ञता व्यक्त करने से और प्रार्थना से अहं की कमी होती है।

❖ कायिक, वाचिक और मानसिक स्वार्थ कम करने से अहं कम होता है।

❖ देहबुध्दि की कमी से अहं की कमी होती है।

❖ स्वयं के विकारों पर काबू रखने से और विकार कम करने से अहं की कमी होती है।

❖ राय न देने से, दूसरों के बातों को न काटने से और शिकायतें न करने से अहं की कमी होती है।

❖ विश्व की व्याप्ति में स्वयं की तुलना करने से अहं की कमी होती है।

❊ ❊ ❊ ❊